डी.वी.डी. नं.382, वी.सी.डी. नं.2319, ऑडियो नं.2805, प्रातः क्लास 05.11.66

कौन है - ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''?

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है!

प्रातः क्लास चल रहा था- 05.11.1966। शनिवार को 7वें पेज के अंत में बात चल रही थी कि संगमयुग को 100 वर्ष देना चाहिए तो ये कचरपट्टी सारी साफ हो जाए। कौन-सी कचरपट्टी? संगदोष और अन्नदोष में (आने की), जब से ज्ञान में चल रहे हैं तब से उस कचरपट्टी में ही पड़े हुए हैं। बाबा ने बार-2 आगाह किया- हंस-बगुले इकट्ठे रह न सकें। तो जब सारी कचरपट्टी चली जावे, फिर वो जो बचते हैं; सूर्यवंशी और असल चंद्रवंशी जो बचते हैं, उनमें से भी जो वो हैं; 'वो हैं', किनकी तरफ़ इशारा किया? कि सूर्यवंशियों में भी, रुद्रमाला के मणकों में भी ऐसी-2 सृष्टि की बीज-रूप आत्माएँ हैं, जिनमें देहभान का बहुत मोटा छिलका चढ़ा हुआ है और चंद्रवंशियों में भी, जो मुखवंशावली हैं वो तो विजयमाला के मणके हैं ही; परंतु विजयमाला में आने वालों के अलावा कोई तो ब्रह्मा की गोद लेने वाले 63 जन्मों में अनेक नीची कुरियों वाले ब्राह्मण सो देवता और देवता सो नीची कुरी वाले धर्म-सम्प्रदायों में जा करके संग का रंग लगाते हैं, अन्नदोष /संगदोष में चले जाते हैं, वो सब चले जावें।

जो ब्रह्मा की गोद में खेलने वाले कुखवंशावली हैं-कुख माने गोद-जिनको गोद का बहुत नशा रहता है; मुख का नशा इतना नहीं रहता है कि ब्रह्मा के मुख से हमने शिवबाबा की वाणी सुनी, जो शिवबाबा अखूट ज्ञान का भंडार है; क्योंकि वो ही एक आत्मा है जो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती है; इसलिए त्रिकालदर्शी है। वो आत्माओं का बाप है, निराकार आत्माओं को निराकारी वर्सा देता है। आत्माएँ अविनाशी

तो निराकार आत्माओं के बाप का वर्सा भी अविनाशी। निराकारी ज्ञान का वर्सा देता है, जो सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का सच्चा ज्ञान 500-700 करोड़ मनुष्यमात्र में से किसी के पास नहीं (है)। ऐसे शिव बाप के मुख से निकले हुए ज्ञान की ओर जो आत्माएँ तवज्जह नहीं देती हैं, ध्यान ही नहीं देतीं; लम्बे-चौड़े, गोरे-चिट्टे ब्रह्मा की गोद में ही मस्त रहते हैं, जिनको कुखवंशावली ब्राह्मण कहा जाता है, वो कुखवंशावली ब्राह्मण देहभान को छोड़ ही नहीं पाते, पूरे संगमयुग में नहीं छोड़ पाते; इसलिए वो कमज़ोरी रहने के कारण वो आत्माएँ सतयुग-त्रेता में कम कलाओं वाले नीची कुरी के ब्राह्मण सो नीची कुरी के देवता बनते हैं और द्वापरयुग से दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट होते रहते हैं; अनेक जन्मों में उन धर्मों का, धर्मपिताओं का, धर्मपिताओं के फॉलोअर्स का संग का रंग लेते रहते हैं, वो सब पहले ही संगमयुग में चले जाते हैं। तो बताया- वो जो बचते हैं, कौन? ऊँचे-ते-ऊँचे वंश वाले सूर्यवंशी और चंद्रवंशी, दोनों बचते हैं। उनमें से भी जो कमज़ोर-2 आत्माएँ, उनकी भी छटनी होती है। वो सब चले जाएँ, क्लीयर हो जावे और फिर उनको कहेंगे- नई दुनिया में सब नए, पुराने सब भाग गए।

तो ऐसे भी नहीं कहेंगे कि नहीं, सूक्ष्मवतन को 50 वर्ष देवें। सन् 1936 से लेकर 1986/87 तक, जब तक दादा/ब्रह्मा बाबा के 100 साल की आयु पूरी हो; क्योंकि शास्त्रों में भी बोला है- ''ब्रह्मा सौ वर्ष की आयु में ख़त्म हो जाता है।'' तो वो ब्रह्मा, जिसकी गोद में सब धर्म वाले खेलते हैं; जैसे- दिल्ली की गोद में (खेलते हैं); भारत माता की राजधानी, जिसके लिए बोला- दिल्ली का सुधार तो सारी दुनियाँ का सुधार, दिल्ली का परिवर्तन तो सारी दुनियाँ का परिवर्तन। वो ब्रह्मा की आत्मा जो किसी माता में प्रवेश करके महाकाली का तामसी पार्ट बजाती है, जिससे कलियुगी तामसी दुनिया के अंत में सभी धर्म की 500-700 करोड़ आत्माएँ ब्रह्मा की औलाद कही जाती हैं। तो बोला- वो ब्रह्मा, जो माता में प्रवेश करके माता के रूप में पूजनीय पार्ट बजाता है, उसके लिए सौ वर्ष बताए; परंतु बाप कहते हैं- नहीं, 100 वर्ष तो लग ही जाना होगा।

अरे, उस 100 वर्ष से भी कोई फ़ायदा नहीं; क्योंकि महाकाली सभी असुरों का विनाश कर देती है। सिर्फ़ असुरों के विनाश से थोड़े ही फ़ायदा होगा। पहले बोलो- वो विनाश की बात तो रही एक ओर, वो 10 वर्ष लगे शूटिंग पीरियड में 1936 से ले करके 1942/45 वर्ष के बीच; जबकि दुनिया में भी द्वितीय विश्व-युद्ध हुआ था, हीरों की शमा- हीरोशमा सारा ही जल गया। यहाँ है बेहद के हीरों की बात। जिन 10 वर्षों के लिए बोला था कि यज्ञ के आदि में स्थापना के साथ-2 विनाश की ज्वाला भी प्रज्वलित हुई थी। "जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञकुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रकट हुई।" (अ०वा०3.2.74 पृ०13 अंत) तो 10 वर्ष में वो टोटल विनाश हुआ; क्योंकि गॉड इज़ सत्, गॉड इज़ ट्रूथ, ट्रूथ इज़ गॉड और गॉड एक ही होता है; अनेकव्यापी तो होता नहीं। भगवान तो एक व्यापी ही होता है। तो उन 10 वर्षों में टोटल विनाश हुआ। एक ही बचा, जिसके लिए बोला- यज्ञ के आदि में एक आत्मा एक तरफ़ और सारी दुनियाँ दूसरी तरफ़ हो गई थी। जिसके लिए फ़िकरा बोला- ''अल्फ को अल्लाह मिला, बे को मिली बादशाही।'' कौन अल्फ, कौन बे? उर्दू के अक्षर हैं। अव्वल नंबर अक्षर है 'अल्फ', जो पुरुषार्थ में सदा खड़ा रहता है; नंबर दो का अक्षर है 'बे', जो पड़ा रहता है, गिर जाता है। तो जो सारे संगमयुग में टोटल आसुरी

दुनिया के विनाश के लिए निमित्त बनता है; गाया हुआ है- ''शंकर द्वारा विनाश''। वो कालों का काल है, महाकाल है, जिसको कोई काल खा नहीं सकता। संगमयुग में जो आदि के 10 वर्ष हैं, उनमें भी उस आत्मा के शरीर को कोई ख़लास कर सकता है, जो मुरली में बोला- लाश भी गुम कर दी; लेकिन आत्मा को कोई ख़लास नहीं कर सकता। "त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक उनका(उनकी) लाश गुम कर दिया है। वह है तो आत्मा ही। खाती भी है, वह ज्ञान का सागर भी है।" (मु॰10.9.73 पृ॰1 मध्य) भले सारी दुनियाँ एक ओर हो जाए और वो एक तरफ़ हो जाए, फिर भी उसके उमंग-उल्लास को कोई भी अंत मते सो गते में नहीं ले जा सकता।

तो 10 वर्ष की बात बताई कि वो 10 वर्ष लगे या ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में, ब्राह्मणों के संगठन का दूसरी बार विनाश हुआ। कब हुआ? 18 जनवरी, 1969 की बात है- दादा लेखराज ब्रह्मा का हार्ट फेल हो गया। गीता-ज्ञान मुरली में बोला है- योगियों का हार्ट फेल नहीं हो सकता। "याद से ही आयु बड़ी होनी है। ... पुरुषार्थ करना है निडर हो रहने का। शरीर आदि का कोई भी भान न आवे। उसी अवस्था में जाना है। ... यह रीहलसल तीखी करनी पड़े। प्रैक्टिस न होंगी तो खड़े हो जावेंगे, टाँगें थिरकने लग पड़ेंगी और हार्टफेल अचानक होता रहेगा। ... योग वाले ही निडर रहेंगे। योग से शक्ति मिलती है।" (रात्रि मु.ता.15.6.69) "योगी की आयु हमेशा बड़ी होती है। भोगी की कम।" (मु.ता.31.8.69 पृ.3 आदि) फिर भी, सूक्ष्म शरीर तो धारण किया। अचानक मौत होने वालों को सूक्ष्म शरीर धारण करना पड़ता है। दादा लेखराज ब्रह्मा के 100 साल तो पूरे नहीं हुए। तो बोला है- ब्रह्मा मृत्युलोक में ख़लास हो जाता है। "ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी।" (मु.26.10.68 पृ.2 अंत) मृत्युलोक में ख़लास होगा तो 100 साल पूरे होते हैं। 1947 से दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा जब मुरली चलना शुरू हुई तो मुरली चलाने के लिए शिव ने प्रवेश किया, दादा लेखराज का 'ब्रह्मा' नाम रखा और विद्यालय का 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम रखा गया। तो वो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय दादा लेखराज ब्रह्मा की 100 वर्ष आयु पूरी होने तक विघटन का रूप उतना नहीं लेता, जितना लेना चाहिए था। मुरली के अनुसार ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का नया नाम निकल पड़ता है- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी शब्द हटाकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय' लिख देना चाहिए। "गॉड फादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे। इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे, फिर बोर्ड में भी वह (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी) अक्षर हटाकर यह स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राय करके देखो, लिखो- 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी।' इनकी एम-ऑब्जेक्ट यह है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारे म्युज़ियम, चित्रों आदि में भी चेंज होती जावेगी, फिर सब सेंटर्स पर लिखना पड़ेगा- 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी'।" (मु.ता.20.3.74 पृ.4 अंत)

तो नया नाम शुरू हो गया और काम तो जो अव्वल नंबर ब्रह्मा है, जिसे परंब्रह्म कहा जाता है, सन् 1936 में ही परंब्रह्म में शिव ने प्रवेश किया, दादा लेखराज के साक्षात्कारों का क्लैरिफिकेशन दिया, ज्ञान का बीज डाल दिया। तो वो परंब्रह्म की आयु, 1936 में 60 वर्ष और 60 वर्ष में 40 वर्ष जोड़ें तो कितना आता है? (किसी ने कहा- 76) 100 साल पूरे हो जाते हैं 1976 में, जिस 1976 के लिए 1966 की मुरली में

घोषणा कर दी थी- पुरानी ब्राह्मणों की दुनिया का विघटन/विनाश और नए ब्राह्मणों की दुनिया की शुरुआत हो जाएगी। "10 वर्ष में हम भारत को फिर से सतयुगी, श्रेष्ठाचारी, 100 प्रतिशत पवित्रता-सुख-शांति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनिया का विनाश कैसे होगा, वो आकर समझो।" (मु.ता.25.10.66 पृ.1 मध्य) नई दुनिया की शुरुआत, पुरानी दुनिया का विनाश और ये भी बोला कि इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? आज से 10 वर्ष कम 5 हज़ार वर्ष हुआ। "इन ल॰ना॰ का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।" (सन् 66 की वाणी है) (मु॰4.3.70 पृ॰3 मध्य) तो सन् 1976 आता है। 1976 में लक्ष्मी-नारायण वाली आत्माएँ उर्फ़ राम-सीता वाली आत्माएँ ब्राह्मणों की दुनिया में प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेने लगती हैं, जन्म ले लेती हैं और जिन ब्राह्मणों के लिए मुरली में बोला- तुम बच्चों की देहभान की सारी कट उतरने पर तुम बच्चे डायरैक्ट बाप से सीखोगे। "बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी ना। सुई साफ है तो चकमक तरफ खैंचेगी। कट लगी हुई होगी तो खैंचेगी नहीं। यह भी ऐसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेंगी।" (मु.ता. 16.3.68 पृ.3 मध्यांत) तो ये सन् 1976 से शुरू हो जाता है। एक-2 करके, दादा लेखराज के द्वारा जो ब्राह्मणों की सृष्टि रची गई, उस ब्राह्मणों की सृष्टि का विघटन होता है और एडवांस पार्टी का नया संगठन शुरू होता है।

उस समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय बदल करके 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम नहीं पड़ा। जैसे- सन् 1936 में 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम नहीं था, 'ॐ मण्डली' नाम था। किसकी मण्डली? (किसी ने कहा- ओम्) आ, उ, म; आ माने ब्रह्मा, उ माने विष्णु, म माने महेश। महा ईश माना महेश। तो महा ईश कहा ही तब जाता है जब ईश अर्थात् शासन करके दिखाए। महा माने बड़े-ते-बड़ा, सारी दुनियाँ के ऊपर शासन करके दिखावे, विश्व की बादशाही लेकर दिखावे। नहीं तो इस दुनिया की हिस्ट्री में विधर्मियों में से बड़े-2 महत्वाकांक्षी- हिटलर, नैपोलियन, मुसोलिनी, कैसे-2 हिम्मत वाले निकले; लेकिन कोई ने भी सारी पृथ्वी के ऊपर राज्य नहीं किया, विश्व की बादशाही ले नहीं पाई। वो विश्व का बादशाह, जो संगमयुग में ही नर से डायरैक्ट नारायण बनता है; सतयुग के आठों नारायणों की तरह नर से प्रिंस नहीं बनता, डायरैक्ट नर से नारायण बनता है। वो सारे विश्व पर विश्व की बादशाही प्राप्त करता है; परंतु दुनिया का हर काम पहले सूक्ष्म में होता है, बाद में स्थूल में होता है। मकान बनाएँगे, दुकान बनाएँगे, कारखाना बनाएँगे, पहले सूक्ष्म में मन-बुद्धि के अंदर ख़ाका खिंचेगा, बाद में उसका छोटा-सा मॉडल बनाया जाता है, फिर बाद में स्थूल रूप में मकान-दुकान-कारख़ाना बनता है। ऐसे ही, ये विश्व की बादशाही का नक्शा जिस आत्मा की मन-बुद्धि में पहले ही आता है, वो है नर से नारायण बनने वाली आत्मा, जिसका प्रत्यक्षता रूपी जन्म सारे ब्राह्मण परिवार ने मनाया था- बाप का प्रत्यक्षता वर्ष। कौन-से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष? मनुष्य-सृष्टि के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष; आत्माओं के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष नहीं। आत्माओं का बाप तो शिव है, जिसकी बिंदी का ही नाम 'शिव' है। उसका शरीर होता ही नहीं, उसके शरीर का नाम होता ही नहीं। और आत्माओं के शरीर का नाम होता है; (लेकिन) शिव की आत्मा का नाम, उसकी बिंदी का ही नाम 'शिव' है। उस शिव के लिए तो गायन है- 'महाशिवरात्रि'। कैसी रात्रि? जिससे बड़ी कोई अज्ञान की रात्रि दुनिया में

होती ही नहीं। सन् 1976 को महाशिवरात्रि नहीं कहेंगे। मनुष्य-सृष्टि का बाप जो सूर्यवंशी गाया हुआ है- राम, उस मनुष्यात्मा की ज्ञान के आधार पर प्रत्यक्षता हो जाती है। तो कितने वर्ष हुए सन् 1976 में? संगमयुग को 40 वर्ष (हुए)।

तो बोला- ''वो 10 वर्ष लगे कि 40 वर्ष लगे?'' फिर आगे और बोला कि ''50 वर्ष लगे?'' कब पूरे होते हैं 50 वर्ष? 1986-87 में, जब दादा लेखराज ब्रहमा की सोल पूरे एक साल तक गुल्ज़ार दादी में प्रवेश ही नहीं कर पाई। वहाँ उस ब्रहमा के 100 साल पूरे हुए, मृत्युलोक में ब्रहमा ख़लास हुआ। जैसे- सन् 1976 में परंब्रहम, वो पुरानी आत्मा, तमोप्रधान आत्मा, अज्ञान से भरपूर आत्मा, उसके 100 साल पूरे हुए, मृत्युलोक पूरा हुआ, तो कहाँ आ गई? अमरलोक में आएगी। अमरलोक में कैसे? अमरलोक में भी ऐसे आती है कि बेहद का बाप है, बेहद के बच्चे हैं, तो बेहद का जन्म है, बेहद की मृत्यु है। बेहद का जन्म है- बाप के ऊपर निश्चय; बाप को पहचान लिया, जान लिया, बाप का बच्चा बन गया, तो बेहद का जन्म हो गया और खुदा-न-खास्ता बाद में बाप को भूल गया, अविश्वास आ गया, अनिश्चय बुद्धि बन गया, तो बच्चा मर गया, मृत्युलोक में चला गया। तो सन् 1976 में ब्रहमाकुमारियों ने भी चित्रों में वह आत्मा दिखाई थी। पहले ब्रहमाकुमारियाँ सेण्टर के दरवाज़े पर एक बड़ा बोर्ड लगाती थीं। किसी को याद आया? (किसी ने कहा- कृष्ण के हाथ में गोला) हाँ, उसमें लिखा होता था- श्री कृष्ण आ रहे हैं। बुद्धि रूपी हथेली में स्वर्ग का बड़ा गोला दिखाया था, ख़ाका दिखा दिया और लात में नर्क की दुनिया का गोला दिखा दिया। ब्राहमणों की उस नर्क की दुनिया को लात मार दी। कैसे? आप मुये मर गई दुनिया, कोई लेना-देना नहीं। किससे लेना-देना? हैविनली गॉडफादर से लेना-देना, जो हैविन का रचयिता बाप है उससे लेना-देना; इन देहधारी धर्मगुरुओं से कुछ भी लेना-देना नहीं; क्योंकि बाप ने ही बोल दिया- इन देहधारी धर्मगुरुओं को मारो गोली। "इन गुरुओं को मारो गोली।" (मु.ता. 7.1.67 पृ.3 मध्यादि) तो आप मुये मर गई दुनिया। भले मुरली में बोला है- लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? लेकिन लक्ष्मी-नारायण बड़ेपन का नाम है या बच्चा बुद्धि का नाम है? बड़ेपन का नाम है। पहले तो बच्चा बुद्धि होगा ना! इंजीनियर भी मकान का ख़ाका बनाता है -ये भी सृष्टि रूपी मकान है- तो क्या एक ही बार में ख़ाका तैयार कर लेता है कि बार-2 बनाता है, बार-2 उसमें संशोधन करता है? तो ऐसे ही जो ब्रहमाकुमारियों ने ये चित्र ''श्री कृष्ण आ रहे हैं'' बनाया था। उन्होंने तो सिर्फ़ बनाया; लेकिन क्या प्रैक्टिकल में अनुभव किया कि श्री कृष्ण वाकई आ रहे हैं? अभी तक भी अनुभव किया? नहीं किया। तो क्या झूठा बोर्ड लगाया था? नहीं, करन-करावनहार तो कोई दूसरा है, उसने लगवाया और लगाने वालों ने लगाया। वास्तव में वो चित्र सन् 1976 से सच्चा साबित हुआ। लक्ष्मी-नारायण उर्फ़ संगमयुगी राधा-कृष्ण की आत्मा प्रैक्टिकल में प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले लेती हैं। जैसे बच्चों की बुद्धि में दुनिया की असलियत धीरे-2 समझ में आती है; बुद्धि धीरे-2 परिपक्व बनती है कि एकदम परिपक्व हो जाती है? (किसी ने कहा- धीरे-2) तो ऐसे ही होता है। सन् 1976 से जो नई दुनिया का नक्शा आता है, (उसमें) दिन-प्रतिदिन एमेंडमेंट होता जाता है, परिपक्व स्टेज को प्राप्त करता है और 10 साल के अंदर, जो शास्त्रों में दिखाया है कि जब नई दुनिया बनी थी, तो पहले-2 कौन आया? सागर में कृष्ण (को) दिखाते हैं। कौन-से सागर में? विषय-सागर में, संसार-सागर में, विषय-विकारों के हिलोरे लेने वाले सागर में पीपल के पत्ते की हल्की नवैया के ऊपर।

पीपल के पत्ते का मिसाल क्यों दिया? बनियन ट्री पत्ते का मिसाल क्यों नहीं दिया? क्या कारण? (किसी ने कहा- पीपल का पत्ता हल्का होता है) पीपल का पत्ता हल्का नहीं होता है, उससे तो हल्का नीम का ही पत्ता होता है। थोड़ा भी हवा का झोंका होगा तो पीपल का पत्ता ज़ोर से हिलेगा। इस संगमयुग में भी हर मनुष्यात्मा के सामने बेहद का माया का झोंका आता है; लेकिन जो चैतन्य पीपल के पत्ते वाली आत्मा है, उसके ऊपर से हवा का हल्का झोंका भी आता है तो वो ज़ोर से हिलने लग पड़ती है और कोई बार-2 हिलेगा तो पत्ता आख़रीन टूट जाता है। उस पत्ते का नाम ही है- दिल्ली रूपी दिल। लोग गीत गाते हैं- ''शीशा हो या दिल, आख़िर टूट जाता है।'' तो वो कौन-सा पत्ता है जिसके लिए मुरली में बोला- बाप के साथ लम्बे समय तक रहने वाला, बहुत संग का रंग लेने वाला अनिश्चय बुद्धि की मृत्यु में सो जाता है, बाप को भूल जाता है। बताओ- कौन-सा पत्ता है? (किसी ने कहा- पीपल का पत्ता) पीपल का पत्ता! अरे, वो तो मिसाल दिया। जगदम्बा, किसकी अम्बा? जगत की अम्बा।

'जगत' नाम क्यों पड़ा? सदा सर्वदा जागने वाले की अम्बा है। 1976 में ज्ञान-सूर्य राम वाली आत्मा का उदय होता है; गीता में ही बोला है- मैं भगवान जब आता हूँ, तो पहले-2 किसको ज्ञान देता हूँ? सूर्य को ज्ञान देता हूँ, जो प्रैक्टिकल में ज्ञान-सूर्य का पार्ट बजाने वाला है। (4/1) ज्ञान सूर्य वाली आत्मा सन् 1976 से प्रत्यक्ष होती है और पहले-2 कौन-से शहर में प्रत्यक्षता होती है? पहला-2 संगठन कहाँ से बनना शुरू होता है? अरे, अ.वाणी में ही बोल दिया था- ''दिल्ली से आवाज़ निकलेगा।'' (अ.वा. 26.12.78 पृ.157) दिल्ली है स्थापनाकारी, बम्बई है विनाशकारी, जो है ही हर-2 बम-2 की नगरी। दिल्ली है जगदम्बा की भूमि, जो महाकाली का पार्ट बजाती है। जिस जगदम्बा की गोद में सारे जगत की 500/700 करोड़ आत्माएँ, मनमाने ढंग से खेल खेलती हैं। जैसे- छोटा बच्चा होता है ना, माँ की गोद में खेलता भी है, नाक भी पकड़ता है, आँख में उँगली भी डालता है, कुछ भी करता है, है ही बच्चा बुद्धि। तो जो भी बच्चा बुद्धि दूसरे धर्म की आत्माएँ हैं, धर्मपिताएँ हैं या उनके फॉलोअर्स हैं या उन धर्मों में कन्वर्ट होने वाली देवात्माएँ हैं, वो सब किसके बच्चे हैं? सब जगदम्बा के बच्चे हैं। जगदम्बा शरीर है और उसके मस्तक पर चंद्रमा दिखाया जाता है, वो कौन है? ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा, जिसकी गोद में नौ कुरियों के ब्राह्मण, जो नौ धर्मों से चुने जाते हैं, वो मनमाने ढंग से खेल खेलते हैं; जैसे- दिल्ली की गोद में सब धर्मों ने राज्य किया-हिस्ट्री उठाके देख लो- मनमाने ढंग से खून-ख़राबा किया।

जगदम्बा का पार्ट बजाने वाली दिल्ली से निकलती है। दिल्ली से बीज-रूप एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया का स्थापना का कार्य शुरू होता है। जो सृष्टि के अंत तक जागने वाली आत्माएँ हैं- रुद्रमाला के मणके, जिनका नाम पड़ता है 'एडवांस पार्टी'। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पहला-2 कुल, पहला-2 वंश- सूर्यवंशी आत्माएँ, जिनके लिए शिवबाप ब्रह्मा के तन से बोलते हैं कि इतनी बड़ी 500/700 करोड़ दुनिया के बीच तुम बच्चे ही हो, तुम बच्चों में भले कोई गुण नहीं हैं; लेकिन भगवान उन्हीं बच्चों को चुनते हैं। ख़ास किस काम के लिए? रावण सम्प्रदाय पर विजय पाने के लिए, रावण सम्प्रदाय को ख़लास करने के लिए। बच्चे कहते हैं- "मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई।" अरे, सब प्रकार के गुण

प्योरिटी से आते हैं। दुनिया के सारे काम प्योरिटी से होते हैं। और ये राम की सेना कभी हताश होती है, तो शिवबाबा उनको आथत देते हैं- ''बच्चे, दुनिया की और धर्मों की आत्माओं ने भगवान बाप को नहीं पहचाना; लेकिन तुम बच्चों में कोई गुण हों या न हों; लेकिन बाप कौन-सा गुण देखते हैं? एक ही गुण देखते हैं कि तुम मुखवंशावली बच्चों ने ही ब्राह्मणों की दुनिया में बाप को पहचाना।'' जो ब्राह्मण सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण देवता, त्रेता में क्षत्रिय, द्वापर में वैश्य, कलियुग में शूद्र भी पहले-2 बनते हैं, उन सब ब्राह्मणों के बीच में तुम बच्चों को बाप ने चुन लिया। किसलिए चुन लिया कि दुनिया ग्लानि करे? वो नीची कुरियों वाले ब्राह्मण, जो और-2 धर्मों में कन्वर्ट होते रहे हैं, वो दुनिया के साथ मिल करके अख़बारों में, रेडियो में, टी.वी. में, टी.वी. चैनल्स में ग्लानि करें? अरे, ये तो दुनिया के सबसे जास्ती विकारी धर्मावलंबी हैं, जो अपने विकारों को छोड़ ही नहीं पाते। बाप कहते हैं- मैं तो हूँ ही पतित-पावन। पावन बनाने के लिए मैं किनको चुनता हूँ- पावन को चुनता हूँ? संन्यासियों को चुनता हूँ? किसको चुनता हूँ? पतितों को ही चुनता हूँ। तो तुम होलडाल क्यों होते हो बच्चे? भले दुनिया कहती है- भगवान ने बंदरों की सेना ली, बंदर बुद्धियों की सेना ली; लेकिन बाप कहते हैं- मुझे तुम बच्चे ही प्रिय हो और सब धर्मों से जास्ती प्रिय हो। क्यों? औरों ने नहीं पहचाना और तुमने पहचान लिया। तो ये तुम्हारा बड़े-ते-बड़ा गुण है। तो पहले-2 ऐसे बंदर सम्प्रदाय बच्चों को, बंदर से मंदिर लायक बनाने के लिए बाप आया हुआ है।

पहले-2 उस निराकार भगवान बाप से कौन-से वर्से की प्राप्ति होती है? बाप से तो वर्सा मिलता है ना! कौन-सा वर्सा मिलता है? निराकार बाप से निराकारी ज्ञान का वर्सा ही मिलेगा ना! और धर्म-सम्प्रदाय वालों को, चाहे वो ब्रह्मा की औलाद चंद्रवंशी हों, इस्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियन वंशी हों, उनको ये ऊँचे-ते-ऊँचा ज्ञान का वर्सा नहीं मिलता जो भगवान का वर्सा है। भगवान क्या है? ज्ञान का अखूट भंडार है। उस भंडार में से कोई सारा-का-सारा भंडार उठा ले, फिर भी पूरा-का-पूरा भंडार बचता है- ऐसा भोला-भंडारी है। तो वो भंडार तुम सूर्यवंशी बच्चों को नंबरवार मिलता है।

तुम बच्चों का, जो सूर्यवंशी बच्चे गाए हुए हो, उनका प्रैक्टिकल में ज्ञान-सूर्य बाप कौन है ? कोई पूछते हैं- तुम्हारा कौन-सा वंश है? जिससे वंश की शुरुआत हुई उस हिस्ट्री को पूछा जाता है। चंद्रवंशी कहेंगे तो चंद्रमा से शुरुआत हुई, सूर्यवंशी कहेंगे तो सूर्य से शुरुआत होती है। तो कोई प्रैक्टिकल में ज्ञान का सूर्य है; परंतु ज्ञान का सूर्य कब प्रत्यक्ष होता है? अरे! रात के 12 बजे प्रत्यक्ष होता है, एक बजे/दो बजे/तीन बजे/चार बजे या पाँच बजे प्रत्यक्ष होता है? (किसी ने कहा- 12 बजे) रात्रि के 12 बजे प्रत्यक्ष होता है? रात्रि के 12 बजे से ज्ञान-दिन की शुरुआत विदेशियों में मानी जाती है या भारत में मानी जाती है? (किसी ने कहा- विदेशियों में)। माना विदेशी आत्माएँ, विधर्मी आत्माएँ, वो आत्मलोक से निकली हुई ताज़ी-2 आत्माएँ (हैं), सृष्टि रूपी रंगमंच पर नई उतरी हुई आत्माएँ (हैं), जिनकी मन-बुद्धि रूपी आत्मा सात्विक होती है, तीखी होती है; इसलिए वो बुद्धियोग से बाप को ज़ल्दी पहचान लेते हैं। यही ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में हुआ। दक्षिण भारत को भारत का विदेश बोला गया।

तो सन् 1986-87 में जिस दादा लेखराज ब्रह्मा की गोद में विदेशियों ने पालना ली, वो ब्रह्मा का 100 वर्ष कार्यकाल पूरा हुआ और वो दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा ये जो संसार-सागर विषय-सागर है, उस विषय-सागर में जगदम्बा का पार्ट बजाने वाली माता में प्रवेश कर जाती है और प्रवेश करके बड़े आराम से अपने बुद्धि रूपी पाँव के अँगूठे को चूसती रहती है। आपने देखा होगा- बच्चे/शिशु अपना अँगूठा चूसते हैं ना! (किसी ने कहा- हाँ!) कौन-सा अंगूठा? (किसी ने कहा- पैर का) पाँव का अंगूठा चूसते हैं? हाथ का भी अंगूठा चूसते हैं। जो अंगूठा है, उसको कहा जाता है कि आत्मा अंगुष्ठाकार है। कैसे आकार वाली है? अंगुष्ठाकार वाली। जैसे- शालिग्राम को दिखाते हैं अंगुष्ठाकार। तो आत्मा रूपी अंगूठे को चूसती है; लेकिन हाथ का अंगूठा नहीं; कौन-सा अंगूठा? पाँव का अंगूठा; क्योंकि बाप कहते हैं- तुम बच्चे उल्टी सीढ़ी चढ़ते हो। इस संगमयुग में तुम 84 जन्मों की उल्टी सीढ़ी चढ़ते हो। 84 जन्मों की सीढ़ियाँ 5000 वर्ष में ऊपर से नीचे सीधे उतरते हो और अभी संगमयुग में उल्टी सीढ़ी चढ़ते हो। तो जो सृष्टि रूपी वृक्ष का पहला पत्ता कृष्ण है उसकी सन् 1986-87 की संगमयुगी यादगार शास्त्रों में दिखाई है कि वो कृष्ण वाली आत्मा, पीपल के पत्ते की मानिंद पार्ट बजाने वाली आत्मा जगदम्बा है, रुद्रमाला का लास्ट मणका, सबसे कमज़ोर आत्मा, उसमें कृष्ण उर्फ ब्रह्मा की सोल प्रवेश करती है; इसलिए पीपल के पत्ते पर कृष्ण को दिखाया है। क्या करते हुए? आत्मा रूपी अंगूठे को चूसते हुए। माने आत्मा का मनन-चिंतन-मंथन वहाँ से शुरू होता है; सम्पन्न नहीं होता है, शुरुआत होती है। विषय-सागर हिलोरे ले रहा है और पीपल के पत्ते की वो चैतन्य नैया इतनी हल्की-फुल्की, फिर भी उसका गायन है- ''नैया हिलेगी-डुलेगी; लेकिन डूबेगी नहीं।'' ऐसी नैया के ऊपर वो कृष्ण कन्हैया भक्तिमार्ग के चित्रों में यादगार रूप से में दिखाया गया (है)।

विषय-सागर में इतनी हल्की नवैया है तो डूबती-उछलती भी तो होगी ना! (किसी ने कहा- होगी) कि विषय-सागर के जल में ऊपर ही रहेगी? डूबती भी है, उछलती भी है। लोगों को शंका होती है- ये तो डूब ही जाएगी, डूबी-की-डूबी; लेकिन वो डूबती नहीं है। क्यों? क्योंकि उस पर कृष्ण जैसी 16 कला सम्पूर्ण बनने वाली आत्मा, सतयुग की पहली आत्मा विराजमान है; जिसका बाप 'हैविनली गॉडफादर' अंग्रेज़ों में गाया हुआ है। कैसा फादर? हैविन की रचना करने वाला फादर। तो वो फादर खिवैया है। ''नैया हमारी पार लगाना, कृपा की बल्ली ऐसी लगाना''- ऐसे गीत गाते हैं। नैया है (शरीर रूपी) नवैया, बिठैया है कृष्ण कन्हैया और खिवैया है शिव बाबा। कौन कृष्ण की शरीर रूपी नैया को खे करके विषय सागर से पार स्वर्ग में पहुँचा दे, जीवनमुक्ति में पहुँचा दे? जीवनमुक्ति कौन दे सकता है? जिसका जीवन होगा, वो जीवन दे सकता है या 5000 वर्ष के ड्रामा में जिसका अपना जीवन ही नहीं, वो जीवन दे सकता है? स्वर्ग का वर्सा कौन दे सकता है? धनवान बाप धन का वर्सा देगा, मल्टीमिलियनायर बाप मल्टीमिलियन का वर्सा देगा, महल-माड़ियों-अटारियों का बाप महल-माड़ियों-अटारियों का वर्सा देगा। बाप सृष्टि रूपी मकान बनाने वाला है ना! सृष्टि साकार है या निराकार? सृष्टि साकार है तो रचयिता भी साकार है। निराकार कैसे रचेगा साकार सृष्टि को? इसलिए वो निराकार, साकार में प्रवेश करता है। निराकार, निराकारी घर में ले जाता है। निराकार बाप का घर कैसा होगा? निराकारी घर; निराकारी आत्माओं को ले जाता है और मनुष्य-सृष्टि है साकार (तो) मनुष्य-

सृष्टि का बाप भी साकार (ही है), तो साकार बाप, साकारी सृष्टि में ले जाता है। कैसे ले जाएगा? अरे, सृष्टि के अंत तक साकार रहेगा, नई सृष्टि तक भी साकार रहेगा, तब ही तो ले जाएगा।

500/700 करोड़ मनुष्यात्माएँ, जो तामसी बन जाती हैं और नंबरवार तामसी बनती हैं एक को छोड़ करके। जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है उसको छोड़ करके एक भी आत्मा ऐसी नहीं है जो शिव-समान बन सके; क्योंकि शिव बाप का विरुद है- मैं तुम बच्चों को नंबरवार आप समान बनाता हूँ। तो सबको 100 परसेण्ट आप समान बनाता है या एक ही है जो 100 परसेण्ट बाप शिव-समान बनता है? एक ही है। वो आत्माओं का बाप आप समान बनाने की युक्ति देता है, बनाता-करता नहीं है। वो स्वर्ग नहीं बनाता है; वो निराकारी बाप निराकार बनाता है, निराकारी स्टेज धारण करना सिखाता है। बोलता है- बच्चे, ऐसी प्रैक्टिस करो- एक सेकेंड में साकारी, एक सेकेंड में आकारी, एक सेकेंड में निराकारी। "सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी। साकार में आते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकें। ... इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े, सिर्फ अमृतवेले नहीं। बीच-2 में यह अभ्यास करो।" (अ.वा.10.12.92 पृ.117 मध्य) ऐसी प्रैक्टिस जब करेंगे तो तुम नर से नारायण, विश्व के बादशाह बन जावेंगे। तो जो नर से नारायण बनता है, जिसका नाम ही (है) नारायण- नार माने ज्ञान-जल, अयन माने घर। कहाँ रहता है? सदा ज्ञान-जल में रहता है। संगमयुग में तो जब से नारायण का जन्म होता है तब से ही ज्ञान-जल में रहता है और संगमयुग के अंत तक भी ज्ञान-जल में ही रहता है।

संगमयुग है 5000 वर्ष के ब्रॉड ड्रामा का शूटिंग पीरियड। शूटिंग पीरियड कहो, रिकार्डिंग पीरियड कहो, रिहर्सल का पीरियड कहो। तो जैसी रिकार्डिंग/शूटिंग होगी वैसा ही तो ब्रॉड ड्रामा में पार्ट बजाएगा ना! यहाँ जन्म से ले करके और अविनाशी जन्म ले करके; क्योंकि वो मनुष्य-सृष्टि में एक ही सत् है, जिस सत् का कभी विनाश नहीं होता। "नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सतः।" (गीता 2/16) जो सत् है, उसका इस सृष्टि में कभी विनाश नहीं हो सकता। जो झूठ है, उसका विनाश होता है, झूठ भागता है। जैसे झूठे-2 धर्मों के विदेशी आततायी भारत में आए, भले सारी दुनिया से विजय प्राप्त करते हुए आए; लेकिन भारत में आ करके मुँह की खाके गए, हारकर भाग गए। तो सत्य भागता है या अटल रहता है? (किसी ने कहा- अटल रहता है) और झूठ भाग खड़ा होता है। तो जो एक ही सत् है इस मनुष्य-सृष्टि में, उसके लिए शास्त्रों में गायन है- ''उसकी कभी मृत्यु नहीं होती और उसका साकार रूप में कभी माता के गर्भ से जन्म भी नहीं होता।'' वो अजर-अमर-अविनाशी है, अमरनाथ गाया हुआ है। किसका नाथ? (किसी ने कहा- अमरनाथ) अमर माने? जो मरते ही नहीं माना देवात्मा। वो देवताएँ, जिनका मुखिया बाप अमरनाथ है, जिसकी यादगार अमरनाथ मंदिर ऊँचे-ते-ऊँचे पहाड़ पर बना हुआ है, क्या पहाड़ पर बैठ करके पुरुषार्थ करता है? पहाड़ माने? (किसी ने कहा- ऊँची स्टेज) ऊँचे-ते-ऊँची निराकारी स्टेज में पहुँच जाता है, जिस निराकारी स्टेज की यादगार है- शिवलिंग; परंतु शिव बाप ब्रह्मा के मुख से कहते हैं कि मैं न पूज्य बनता हूँ और न पुजारी बनता हूँ। "न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ।" (मु.ता. 22.5.71 2 मध्यांत) तो अमरनाथ में जो शिवलिंग है या दुनिया में भी जहाँ कहीं शिव के मंदिरों में शिवलिंग हैं, वो कौन-सी आत्मा की यादगार हैं? क्योंकि शिव तो

कहता है कि मैं न पूज्य बनता हूँ और न पुजारी बनता हूँ। तो शिवलिंग किसकी यादगार है? कौन-सी आत्मा की यादगार है? ऐसी कोई साकार मनुष्यात्मा है जो निराकार बाप की बताई हुई ज्ञान की युक्ति के द्वारा अपन को आत्मा समझ निराकारी स्टेज को धारण करती है। जब सम्पन्न निराकार बन जाता है तब उसकी यादगार बनती है- साकारी लिंग सो निराकारी ज्योतिबिन्दु, जो सोमनाथ मंदिर में बिंदु हीरे के रूप में दिखाया गया था; लेकिन हीरा तो पत्थर होता है। तो शिव की उपमा पत्थर बुद्धि से देंगे क्या? शिव पत्थर बुद्धि है, जो सोमनाथ मंदिर में हीरे के रूप में दिखाया गया? (किसी ने कहा- नहीं) तो कौन है वो हीरो, हीरा? (किसी ने कहा- हीरो पार्टधारी) हाँ, इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ऐसा कोई मनुष्य है, मनुष्यात्मा है जो हिस्ट्री में आदि से लेकर अंत तक हीरे की तरह ज्ञान की चमक मारती रहती है- कभी वाचा के रूप में, कभी दृष्टि के फोर्स से, कभी प्रैक्टिकल में इन्द्रियों के कर्म से, सृष्टि में पावर लेती हुई/देती हुई दिखाई जाती है, जिसने शिव से अखूट ज्ञान भंडार, सम्पूर्ण ज्ञान भंडार उठाया। वो संस्कार उस आत्मा में 5000 वर्ष तक रहते हैं; इसलिए हीरो पार्टधारी कहा जाता है। चाहे ड्रामा का पहला सीन हो, दूसरा सीन हो, तीसरा सीन हो, चौथा कलियुगी सीन हो; हीरो पार्टधारी चारों युगों में हीरो का पार्ट बजाएगा या नीचा पार्ट बजाएगा? हीरो पार्टधारी है। आदि में सतयुग-त्रेता में, 16 कला सम्पूर्ण से भी ऊँचा, जो कृष्ण का बाप है, कृष्ण का भी रचयिता है, उस कलातीत का पार्ट बजाता है, जो शास्त्रों में गायन है- ''कलातीत कल्याण कल्पांतकारी'' और जब कृष्ण को जन्म देता है तो बच्चे के साथ 16 कला सम्पूर्ण तो है ही।

कृष्ण बच्चे जैसी पहला पत्ता आत्मा, वो भी कलाओं से क्षीण होने लगती है, तो जो भी नं०वार 5-7 सौ करोड़ पत्ते हैं, वो पहले जन्म के आदि से ही ले करके नीचे गिरते हैं; क्योंकि इन्द्रियों का सुख भोगते हैं। श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ इन्द्रिय है- आँख। तो लक्ष्मी-नारायण के चित्र में भगवान बाप शिव ने साक्षात्कार से दिखाया है कि लक्ष्मी-नारायण के नीचे जो उनके बच्चे खड़े हैं- राधा-कृष्ण, वो कौन-सी इन्द्रिय का सुख ले रहे हैं? आँखों का सुख ले रहे हैं। वो सुख ले रहे हैं, व्यभिचारी सुख ले रहे हैं या अव्यभिचारी सुख ले रहे हैं? भले अव्यभिचारी सुख ले रहे हैं, फिर भी सुख भोगने से उनकी कलाएँ कम होती हैं। पहला पत्ता ही जब नीचे गिरता है तो मनुष्य-सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो भी 500/700 करोड़ पत्ते हैं, सभी नीचे गिरते जाते हैं और नंबरवार तेजी से नीचे गिरते हैं। कोई आत्माएँ धीरे-2 नीचे गिरती हैं, कोई आत्माएँ तीव्रता से नीचे गिरती हैं। जैसे इब्राहीम जिसमें प्रवेश करता है; तमोप्रधान में प्रवेश करता है या पावरफुल आत्मा में प्रवेश करता है? (किसी ने कहा- कमज़ोर आत्मा में प्रवेश करता है) उस समय द्वापर के आदि में सृष्टि में जो सबसे कमज़ोर आत्मा होती है, उसको पकड़ता है। जैसे शिव बाप, आत्माओं का बाप आत्मलोक से आता है तो किसको पकड़ता है? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा को) क्यों? हाँ, जो ऊँचे-ते-ऊँचे, बड़े-ते-बड़े आदमी का बच्चा होता है, अगर (वो) कुसंग में आएगा तो वो बड़े आदमी का बच्चा ज़्यादा नीचे गिरेगा या छोटे आदमियों के बच्चे ज़्यादा नीचे गिरेंगे? तो वो बड़े-ते-बड़ा बाप, सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप, धर्मपिताओं का भी बाप और उसका भी बाप- शिव, जिसका कोई बाप नहीं, वो ऊँचे-ते-ऊँची आत्मा है। उसका जो बच्चा है; कौन है? जिसको परंब्रहम कहा गया है। ''गुरुर्ब्रहमाः, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुः साक्षात् परंब्रहम 'तस्मै नमः', दूसरों को नहीं नमः। तो ऊँचे-ते-ऊँचे बाप का बच्चा, द्वापरयुग से जब विधर्मी

देहभान वाले धर्मपिताओं के संग के रंग में आता है, तो सबसे नीचे गिरता है। तो ऊँचे-ते-ऊँचे बाप ने ये परम्परा इस सृष्टि पर शुरू कर दी। क्या परम्परा शुरू कर दी? आज भी वो परम्परा चली आ रही है। सृष्टि-निर्माण के लिए, परिवार बनाने के लिए जब लड़का-लड़की की शादी होती है तो लड़का ऊँचे कुल का होता है और लड़की नीच कुल की चुनी जाती है, कमज़ोर कुल की चुनी जाती (है)। यही परम्पराएँ धर्मपिताएँ निभाते चले आए। वो भी अपने-2 धर्म के धर्मपिताएँ हैं। उन्होंने भी परमधाम से नीचे आते समय इस सृष्टि में जो कमज़ोर आत्मा होती थी, उसको चुना। इस्लाम धर्म का आधारमूर्त, आधार माने जड़, वो जड़ द्वापर के आदि में बहुत कमज़ोर हो जाती (है)। उसका बाप भी कोई होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) क्योंकि पुराने जमाने में तो बाप भी ज़िंदा रहता था, बाप का बाप-बाबा भी ज़िंदा रहता था, परबाबा भी ज़िंदा रहता था। ऐसे होता था ना! लम्बी आयु होती थी। बच्चा कमज़ोर होता है और बाप के हाथ में तो सत्ता होती है। जैसे महात्मा बुद्ध को देश निकाला दे दिया, बच्चा कन्वर्ट हो गया, बाप कन्वर्ट नहीं हुआ। ऐसे ही इब्राहीम जिसमें प्रवेश करता है, उसको तो इब्राहीम की आत्मा ने कैप्चर कर लिया/कण्ट्रोल कर लिया। जैसे- कोई लड़का, लड़की को भगा ले जाता है, उसकी बुद्धि को कण्ट्रोल कर लेता है, तन-मन-धन को कण्ट्रोल कर लेता है। तो इब्राहीम की आत्मा जिसमें प्रवेश करती है, उसको कण्ट्रोल कर लेती है। क्राइस्ट ने जीसस को पूरा कण्ट्रोल कर लिया; परंतु उसके बाप को तो कण्ट्रोल नहीं कर सका। वो बाप और उसका बाबा, उन देह-अभिमानियों को भारत से अरब देश की ओर खदेड़ देते हैं और अरब खंड में जा करके वो अपना इस्लाम धर्म पनपाते हैं। तो बताया कि बड़े आदमी का बच्चा, जितना बड़ा आदमी होगा, कुसंग में आने पर वो बच्चा ज़्यादा कुसंग में चला जाता है, सबसे जास्ती कुसंग में वो जाएगा। ऐसे ही, बड़े-ते-बड़ा जो आत्माओं का बाप है, सर्वशक्तिवान कहा जाता है, जो सर्वशक्तिवान बाप ब्रहमा के मुख से कहता है- बच्चे, मैं तो सर्वशक्तिवान हूँ; लेकिन तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो। मास्टर का मतलब शरीर के द्वारा प्रैक्टिकल कर्मों में भी सर्वशक्तिवान। मेरा तो अपना शरीर ही नहीं है।

तो बताया कि जब संगम के ये 50 वर्ष पूरे होते हैं तो वो पीपल के पत्ते की नैया को खेने वाला खिवैया इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, सबसे पावरफुल सृष्टि के आदि में और जो उसका बच्चा है कृष्ण, वो गर्भ महल में दिखाया गया; क्योंकि बड़े आराम से आत्मा रूपी अंगूठा चूस रहा है। सागर में पड़े रहने पर भी उसको कोई दुःख-दर्द महसूस नहीं होता, मतलब? कि वो दादा लेखराज ब्रहमा उर्फ कृष्ण वाली आत्मा क्षीर-सागर में अपन को अनुभव करती है, दुःख-दर्द का अनुभव नहीं करती। वो अमरलोक का अनुभव करती है। नर्क में ब्रहमा की 100 वर्ष की आयु ख़लास होती है और स्वर्ग की नई दुनिया में आ जाता है।

पहली बार ब्रहमा ने जो सृष्टि रची और पसंद नहीं आई। ये यज्ञ के आदि के 10 साल वाली ओम मंडली की बात (है)। दूसरी बार सृष्टि रची सन् 1947 में, जो ॐ मंडली से नाम बदल कर ब्राहमणों के संगठन की दुनिया का नाम 'ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' पड़ गया। सन् 1976 तक वो सृष्टि भी ख़लास (हो गई) और नई सृष्टि की शुरुआत (हुई)। पुराने ब्राहमण संगठन का पराभव/विघटन

और नई ब्राहमणों की एडवांस दुनिया की शुरुआत हो जाती है। ये तीसरी बार नई दुनिया रची गई और पुरानी दुनिया का विघटन हुआ।

फिर बोला- ''वो विनाश की बात 10 वर्ष लगे कि 40 वर्ष लगे कि 50 वर्ष लगे?'' कौन-से सन् में 50 वर्ष? 1986-87 में। कि 100 वर्ष लगे! कितने वर्ष लगे? तीन बार बताया- 10 वर्ष, 40 वर्ष, 50 वर्ष। फिर बोला, भगवद्गीता ज्ञान की मुरली में- तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगते हैं। "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।" (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो कब से? तुम बच्चों की शुरुआत कब से हुई? तुम जो रुद्रमाला के मणके हो, वो रुद्रमाला की मनुष्यात्माएँ इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कब से प्रत्यक्ष होती हैं? ये रुद्र-ज्ञान-यज्ञ कब से रचा गया? (1936) यज्ञ के आदि से ही रुद्र-ज्ञान-यज्ञ रचा गया। उसी समय ज्ञान-यज्ञ का बीज पड़ गया; परंतु वो बीज का आरम्भ, ज्ञान का बीज डालने की शुरुआत बाप के द्वारा हुई, जो मनुष्य-सृष्टि का बाप जगतपिता कहा जाता है। ''जगतं पितरं वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।'' शंकर को जगतपिता/जगन्नाथ कहा जाता है, सारे जगत का नाथ आख़रीन बनता है। तो उसके द्वारा ज्ञान-यज्ञ की शुरुआत तो हुई; परंतु बच्चे प्रत्यक्ष नहीं हुए। जैसे- गर्भ में बच्चा/बच्ची आती है, तो प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेती है? नहीं लेती। जब बच्चा बाहर आता है, तो कहा जाता है- प्रत्यक्षता रूपी जन्म लिया। तो ऐसे ही सन् 1936 को रुद्र बाप के लिए ज्ञान का गर्भ कहेंगे और 1976 में जन्म कहेंगे। बाप भी जन्म लेते हैं 1976 से, बच्चे भी जन्म लेते हैं, जो बाद में रुद्रमाला के मणके कहे जाते हैं। उनके लिए बोला- तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष (लगते हैं)। "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।" (मु.ता. 5.10.79 पृ.2 मध्यांत) शिव बाप का कम-से-कम जो अव्वल नंबर बच्चा है, अव्वल नंबर रुद्राक्ष एक मुख वाला, जो एक ही बात करता है, दुमुँहा नहीं है, (40 वर्ष पूरे होने पर उस मणके से सतोप्रधान बनने की शुरुआत हो जाती है)। उन बातों को कोई न समझ पाए, वो दूसरी बात। आमने-सामने आके समझेगा तो ज़रूर समझेगा; परंतु विपरीत बुद्धि बन जाते हैं, आमने-सामने आने की हिम्मत ही नहीं करते; लेकिन शास्त्रों में तो गाया हुआ है- ''सन्मुख होए जीव मोहि जबही, जन्म कोटि, अघः (माने पाप) नासै तब ही।'' सन्मुख होते ही नहीं, अंदर में चुड़डरा भरा रहता है; क्योंकि अंदर में एक और बाहर में दूसरा होते हैं; मुख में राम, बगल में छुरी होती है। कैसे सामने आएँगे? तो बताया- ये 40 वर्ष उस आत्मा के जब पूरे होते हैं; 1976 से लेकर 1977 पूरा होने के बाद, आत्मिक रूप में सम्पूर्णता की स्टेज पूरी हुई, बौद्धिक आधार पर, इन्द्रियों के आधार पर नहीं। माने बुद्धि में जो संकल्प चल रहे हैं, वो संकल्प ज्ञान युक्त ही चलेंगे; अज्ञान के संकल्प नहीं चल सकते। तो बोला- वो विनाश की बात तो ठीक रही। वो 10 वर्ष लगे कि 40 वर्ष लगे......। उनसे भी कोई कनेक्शन नहीं है। अरे, बच्चों का विनाश से कनेक्शन है, फ़ायदा है कि सम्पूर्ण राजधानी की स्थापना से फ़ायदा है? (किसी ने कहा- सम्पूर्ण राजधानी) बच्चों की बुद्धि का कनेक्शन नर्क के विनाश से है या स्वर्ग बन जाने से फ़ायदा है? (किसी ने कहा- स्वर्ग बन जाने से फ़ायदा है) तो जो सम्पूर्ण स्वर्ग बनता है, उसके लिए बोलो- वो सम्पूर्ण स्वर्ग भी तो आगे चल करके देखेंगे ना! कि 2036 में टोटल विनाश हो जाएगा तो हथेली पे आम जम जाएगा? हथेली पे आम का वृक्ष खड़ा किया जा सकता है? टाइम लगेगा ना!

तुम पहले तो समझने वालों से बोलो, तुम पहले पतित से पावन तो बन जाओ। तुम पावन बनेंगे तो पतितों का ख़लासा होगा, बगुला बुद्धियों का ख़लासा हो जाएगा; क्योंकि हंस-बगुले इकट्ठे रह नहीं सकते। तो पहले तुम क्या करो? पतित से पावन तो बन जाओ। कहाँ तक पावन बन जाओ? संकल्पों तक पावन बन जाओ; कोई भी विकारी संकल्प न चल सकें। विकारी संकल्प नहीं चलेगा तो दृष्टि भी विकारी नहीं बनेगी। नहीं तो बाप कहते हैं- बच्चे 10/20/50 विकारी दृष्टि की भूलें रोज़ ही करते होंगे। "थोड़ा भी उस क्रिमिनल दृष्टि से देखा, भूल हुई, फौरन नोट करो। 10-20-50 भूलें तो रोज़ करते ही होंगे।" (मु. 15.8.74 पृ.2 आदि) दृष्टि अगर पावन बन जाए, तो पावन बनने के लिए और क्या रह गया। (किसी ने कहा- कुछ भी नहीं) तो इस धुन में लगे रहो; कौन-सी धुन? कि हम वायब्रेशन से, संकल्पों से, दृष्टि से, ज्ञानेन्द्रियों से, कर्मेन्द्रियों से पहले क्या बन जाएँ? पावन/पवित्र तो बन जाएँ। पिछाड़ी तक इस धुन में लगे रहो। पिछाड़ी माने महामृत्यु के समय तक। सामान्य मृत्यु तो 84 जन्मों में होती ही रही, उसको महामृत्यु नहीं कहेंगे। महामृत्यु कब कहेंगे? जब सारी दुनिया की मृत्यु एक साथ ही हो जाए। उस महामृत्यु के समय तक, पिछाड़ी तक भी और फिर बताया- आप मुये मर गई दुनिया माने अपने देहभान से मर गए तो जैसे दुनिया ख़लास हो गई। जब तक देहभान में जीना है तब तक पीना है। तो जब तक देहभान से मरते नहीं हैं (तब तक) इसी धुन में लगे रहो। कर्मातीत अवस्था तुम्हारे पुरुषार्थ पर है। कर्म इन्द्रियों से अतीत बनते रहो। इसका मतलब ये नहीं है कि कर्मेन्द्रियों से कर्म करना छोड़ दो। कर्मेन्द्रियाँ हैं, तो कर्म तो करना ही पड़ेगा। आँख है, तो फोड़ लेंगे क्या, हमेशा के लिए बंद कर लेंगे क्या? लेकिन स्टेज कैसी बनानी है? देखते हुए न देखने की। कान हैं, तो क्या बंद कर लेंगे? कान तो रहेंगे; लेकिन क्या करना है? सुनते हुए नहीं सुनना। सारी दुनिया ग्लानि करे, अख़बारों में, रेडियो में, टी.वी. में, टी.वी. चैनल्स में, शहर-2 में ग्लानि करे, इंटरनेट में ग्लानि करे; लेकिन सुनते हुए भी नहीं सुनना। किसकी बातें सुनना? एक बाप से सुनना। ये अंत तक फाइनल पेपर होगा। कैसा पेपर होगा? फाइनल पेपर होगा- इन्द्रियाँ कच्ची हैं या पक्की हैं? इसलिए मुरली में बोला- एक से सुनना है। "राइटियस सिर्फ एक बाप ही है। उनसे ही सुनना है।" (मु.ता. 17.3.68 पृ.1 आदि) एक से सुनना है माना एक को देखना है। कर्मेन्द्रियों से अगर संग करना है तो किससे करना है? एक से करना है; अनेकों से कोई संबंध नहीं। अगर अनेकों से सुनेंगे तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। क्या कहा? ये जो आज निश्चयबुद्धि बनते हैं, 9 दिन की गर्भ-महल की भट्ठी करने में आज निश्चय बुद्धि बनते हैं और कल अनिश्चयबुद्धि बन जाते हैं। क्या हो जाता है उनको? एक से सुनने की धुन में नहीं रहते। भट्ठी की, बाहर गए, टैम्पो में गए; टैम्पो वाले ड्राइवर ने सुनाना शुरू कर दिया; ट्रेन में घुसे, ट्रेन में जो अज्ञानी हैं, उन्होंने अपनी बात सुनानी शुरू कर दी- 'अरे भाई, तुम कहाँ चले गए!' तो बस, अनिश्चयबुद्धि हो जाते हैं। तो कोई की बात नहीं सुननी। कोई बात सुनाता है, तो मन-बुद्धि के अंदर बाप की सुनाई हुई वाणी चलती रहे, गूँजती रहे। मुरली से टैली करना है। यहाँ तक बोल दिया- ब्रह्माकुमारी की भी जो मत मिले, उसको भी बाप की वाणी से टैली करना है। "बी॰के॰ की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है? तुम बच्चों को राइट और राँग समझ भी अभी मिली है।" (मु॰27.1.95 पृ॰3 मध्य) वो भी झूठ बोल सकती है, वो भी हमको झूठी बातें सुनाकर, अफ़वाह सुना करके नीचे गिरा सकती है; इसलिए इन्द्रियों से एक का

संग करना है; अनेकों का नहीं। जो स्वर्ग में होना होगा सो होगा; पहले पावन तो बनो। जो ये स्थापना में विनाश और उस विनाश के पीछे जो होगा, सो तो होता रहेगा; उसकी चिंता तुम मत करो। पहले क्या चिंता करो? कि हम मन-बुद्धि से, संकल्पों से, वायब्रेशन से, दृष्टि से, ज्ञानेन्द्रियों से, कर्मेन्द्रियों से ऐसा ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत का संग का रंग लगाएँ, उस ऊँचे-ते-ऊँचे प्रैक्टिकल पार्ट बजाने वाले भगवंत को पहचानें और उससे संग का रंग लगा करके पतित से पावन बन जावें। बाकी जो विनाश होता होगा और विनाश के आगे क्या होगा; उसकी चिंता बाद में कर लेना। हमको (तो) पावन बनाने की जो बात है, वो बुद्धि में पहले रहनी चाहिए। बाबा, आ करके हमको पावन बनाओ। क्या कहा? क्या धुन लगी रहे? बाबा, आ करके हमको पावन बनाओ।

80 साल हो गए, अभी बाबा ही नहीं आया? अरे, आया कि नहीं आया? (किसी ने कहा- आया) आया? 80 साल से आया, बाबा आया! लो, बाबा किसको कहा जाता है? (किसी ने कहा- साकार-निराकार के मेल को) तो 1947 से पहले ब्रह्मा की आत्मा ने बाबा को पहचाना था? उसी पहले पत्ते ने नहीं पहचाना, तो तुमने कहाँ से जान लिया! ब्रह्मा की आत्मा के सन् 1986-87 में सौ साल पूरे हो गए, (और वो) मृत्युलोक छोड़ करके अमरलोक में चली गई; तब तक भी उसने बाबा को पहचाना क्या, साकार और निराकार के मेल को पहचाना? (किसी ने कहा- नहीं) तो तुमने कहाँ से पहचान लिया? कोई अभी भी कहते हैं- हाँ, हमने पहचाना। हम छाती ठोंक के कहते हैं कि अंत तक हम पहचानते हुए ही रहेंगे। तो फाइनल पेपर माया ने अभी नहीं लिया है। तो तैयार रहो। ये 1976 से 40 वर्ष अब पूरे हुए-कि-हुए। इस 40 वर्ष के ड्रामा में जो कृष्ण वाली आत्मा का जन्म हुआ था, 15 अगस्त को डबल जेल से स्वतंत्र हो गया। जिसकी यादगार में जन्माष्टमी मनाते हैं। परंतु वो ब्राह्मण का पहला जन्म हुआ या द्विज टाइटिल धारण कर लिया? 'द्वि' माने दूसरा, 'ज' माने जन्म। ब्राह्मण का एक जन्म होता है या दो जन्म होते हैं? (किसी ने कहा- दो) कैसे? एक जन्म होता है शरीर का और दूसरा जन्म होता है ज्ञान से परिपूर्ण मन-बुद्धि रूपी आत्मा का। मन-बुद्धि रूपी आत्मा परिपक्व बन जाए, वो आत्मा तीन ज्ञान-सूत्रों को पूरा धारण कर ले- ब्रह्मा का ज्ञान-सूत्र, शंकर का ज्ञान-सूत्र, विष्णु का ज्ञान-सूत्र और तीनों सूत्रों की अंत में ब्रह्मफाँस, गाँठ भी लग जाए। तीनों सूत्र मिल करके एक हो जाएँ, इसको कहा जाता है- यज्ञ उपवीत। ज्ञान-यज्ञ, 'उप' माने ऊँची स्टेज, 'वीत' माना बीत गया माने पूरा ज्ञान आ गया, पक्का ब्राह्मण हो गया। पहले ब्राह्मण यज्ञोपवीत धारण करते थे ना! जब तक यज्ञोपवीत धारण न करे (तब तक) उनकी शादी /विवाह भी नहीं कराया जाता था; क्योंकि परिपक्व ब्राह्मण नहीं बना। यज्ञोपवीत धारण करते थे, तो क्या करते थे? अरे, टट्टी-पेशाब, गंदा काम करने के लिए जाएँगे, तो कान बाँध करके जाएँगे। क्या मतलब? गंदा काम भी करेंगे, समझा? जैसे शिव के मंदिरों में शिवलिंग को दिखाया है- भ्रष्ट इन्द्रियों से काम करते दिखाया है; गंदा काम करते दिखाया है या अच्छा काम करते दिखाया है? भ्रष्ट आचरण करते हुए दिखाया या नहीं दिखाया? (किसी ने कहा- दिखाया); लेकिन कान में तीन सूत्रों को बाँध लिया माने कानों को अच्छी तरह बंधन में डाल दिया कि सुनना है तो ईश्वरीय ज्ञान सुनना है, मनन-चिंतन-मंथन करना है तो ईश्वरीय ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन करना है। इसके अलावा सुनने के लिए कान बाँध दिए- और कुछ नहीं सुनेंगे। चिंतन करना है, वायब्रेशन चलाना है, संकल्प चलाना है; तो भी ईश्वरीय

ज्ञान के संकल्प चलें, ईश्वरीय ज्ञान का वायब्रेशन बनाएँ। ऐसा करेंगे, देहभान के अज्ञान के संकल्प नहीं चलाएँगे, तो कर्म का बंधन लगेगा? भ्रष्ट कर्मेन्द्रिय से भले कर्म करें; लेकिन उसका बंधन लगेगा? (किसी ने कहा- नहीं) इसीलिए शिवलिंग की पूजा होती है।

ऐसे बाबा को, जो साकार-निराकार का मेल है, बोलो- अंदर से धुन लगाओ। लगाते भी हैं; क्योंकि मुरली में ही बोल दिया- जो पतित से पावन बनते हैं, वो पतित-पावन को बुलाते हैं; जो पतित से पावन बनते ही नहीं, वो पतित-पावन सीता-राम को बुलाते भी नहीं। तो बोला- बाबा, आ करके हमको पावन बनाओ। 80 साल के बाद गुहार लगाएँगे? अरे, 80 साल की बात तो निराकार के लिए है, जो गुप्त पार्ट बजाता है। वो तो सृष्टि रूपी रंगमंच का फ़ाइनल डायरैक्टर है। ड्रामा में डायरैक्टर पर्दे के पीछे रहता है या रंगमंच पर आता है? (किसी ने कहा- पर्दे के पीछे) तो वो तो डायरैक्टर है, बात तो हमारे बुलाने की है। हम जिसको बुलाते हैं, वो सिर्फ़ निराकार नहीं है; निराकार सो साकार भी है। तो हे बाबा! आ करके हमको पावन बनाओ; क्योंकि पावन बनाने के लिए संग का रंग चाहिए। बाबा आएगा, तो बाबा अपने साथ प्रैक्टिकल में अपना वायब्रेशन लाएगा या नहीं लाएगा? मिसाल है नेहरु जी का। नेहरु जी जब भाषण देने के लिए सामने आते थे, तो भाषण सुनने वालों में से कोई ऐसे-2 सुनने वाले होते थे, जो पीछे से गाँधी जी की और नेहरु जी की बहुत बुराइयाँ करते थे और जब सामने आते थे, तो पलट जाते थे। ये क्या बात है? विवेकानंद अमेरिका में गए। उन्होंने वायब्रेशन की बात बताई, दिखाई भी; (लेकिन) लोगों ने विश्वास नहीं किया। उन्होंने कहा- देखो, मैं अभी बताता हूँ। आधा घंटे तक अच्छे-से-अच्छा भाषण दिया ज़ोर से, अचानक वहाँ से भाग खड़े हुए और सारी पब्लिक उनके पीछे-2 भाग खड़ी हुई। ये क्या हुआ? ये वायब्रेशन की पावर है। ये वायब्रेशन की पावर, जिससे राधा-कृष्ण जैसे 16 कला सम्पूर्ण बच्चों का जन्म होता है। वो 500/700 करोड़ पत्तों में से एक भी पत्ता नहीं है, जिसमें ये वायब्रेशन की 100 परसेण्ट पावर आई हो, जिस पावर से राधा-कृष्ण जैसे 16 कला सम्पूर्ण बच्चों का जन्म होता है। कोई कहेगा- वायब्रेशन से कैसे जन्म होगा? लोग पूछते भी हैं- हम पवित्र रहेंगे, तो वहाँ नई दुनिया में बच्चों का जन्म कैसे होगा? अरे, पपीते का मिसाल है- 2 किलोमीटर दूर मादा या मेल वृक्ष खड़ा होता है, बीच में कोई वृक्ष नहीं होता; तो भी उतनी दूर से वो पराग खींच लेता है और फल पैदा करता है। तो क्या मनुष्य नहीं कर सकता? (किसी ने कहा- कर सकता है) तो देवताएँ श्रेष्ठ इन्द्रियों से आचरण करते थे, श्रेष्ठ इन्द्रियों से सुख भोगते थे और सुखी सृष्टि का निर्माण करते थे; भ्रष्ट इन्द्रियों का आचरण ही नहीं करते थे। ये भ्रष्ट इन्द्रियों का आचरण करना 2500 वर्ष से विदेशी-विधर्मी धर्मपिताओं ने सिखाया, तब से दुनिया में भ्रष्ट आचरण हुआ। तो शिव बाप ब्रह्मा के मुख से कहते - किसको बुलाओ? पतित-पावन बाप को बुलाओ। हे बाबा, आ करके हमको पतित से पावन बनाओ। वो विधर्मी आत्माएँ तो जन्म-जन्मांतर निराकार को मानती रहीं और उनमें से श्रेष्ठ देव आत्माएँ खिंच करके ब्राह्मण भी बनती हैं; लेकिन वो निराकार सो साकार को पहचानने वाली नहीं। जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाले ब्राह्मण हैं। तुम उसको पहचानते हो। पहचानते भी हो, बुलाते भी हो। जो बुलाते हैं; क्या कहके बुलाते हैं? पतित-पावन सीता-राम। जो बुलाते नहीं, वो पतित से पावन बनते ही नहीं।

बाबा राय देते रहते हैं। कौन राय देते रहते हैं? बाबा राय देते हैं कि आत्माओं का बाप राय देते रहते हैं? (किसी ने कहा- बाबा) आत्माओं का बाप युक्ति तो देते हैं कि अपन को निराकार ज्योतिबिंदु आत्मा समझकर निराकारी स्टेज धारण करो। क्या करो? आत्मिक स्टेज धारण करो। जब अपन को सूक्ष्म बिंदु के रूप में स्थिर करेंगे, तो बुद्धि कैसी बनेगी? सूक्ष्म बुद्धि बनेगी और परमपिता का जो सूक्ष्म ज्ञान है "गुह्यात् गुह्यतरं ज्ञानं"- (गीता 18/63), बाबा भी बोलते हैं- मैं गुह्य-ते-गुह्य राज़ की बातें बताता हूँ। "बाप गुह्य-2 प्वॉइंट्स सुनाते रहते हैं।" (रात्रि मु.11.11.68 पृ.1 मध्य) तो क्या देहभान में रहने से समझ लेंगे? बाप तो कहते हैं- आत्मिक स्थिति को धारण करके एक मुरली को 6 बार पढ़ना चाहिए, मनन-चिंतन-मंथन करना चाहिए तब बुद्धि में बैठेगी।

बाबा राय देते हैं पतित से पावन बनने की। शिव बाप ज्ञान की युक्ति बताते हैं और पतित से पावन बनने की राय कौन देता है- बाबा या बाप? बाबा राय देते हैं। जो साकार-निराकार का मेल है- बाबा, वो राय देते हैं कि ऐसे पावन बनो। कैसे पावन बनो? जैसे पावन देवताएँ, विधर्मियों-विदेशियों के, धर्मपिताओं के संग के रंग में आए, तो पतित बन पड़े। कैसे पतित बने? अनेकों के संग के रंग में आए, व्यभिचारी संग के रंग में आए, तो पतित बन पड़े; पतितों के संग के रंग में आए, त्रेता के अंत तक बाबा भी कलाओं में बँधे हुए देवताओं के संग के रंग में आए, तो पतित बन पड़े। तो क्या करो? जो कलातीत है, जो 16 कला सम्पूर्ण बनाने वाला है; खुद बना होगा तो दूसरों को बनाएगा, खुद नहीं बना होगा तो दूसरों को बनाएगा? अरे, इंज़ीनियर होगा तो इंज़ीनियर बनाएगा, डॉक्टर होगा तो डॉक्टर बनाएगा। खुद ही डॉक्टरी नहीं पढ़ी, प्रैक्टिस ही नहीं की; खुद ही इंजीनियरिंग नहीं पढ़ी, इंजीनियरिंग की प्रैक्टिस ही नहीं की, तो कैसे बनाएगा? (किसी ने कहा- नहीं) तो बोला कि बाप नहीं कहते हैं; बाबा कहते हैं, राय देते हैं कि ऐसे पावन बनो। ये पावन बनने की राय देना और किसी को 1976 से पहले आया ही नहीं। भल इस्लामियों की बुद्धि में आया, जो इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने वाले थे, जिन्होंने मुरली में सुना- दृष्टि से सृष्टि सुधरती है; लेकिन ये बुद्धि में नहीं आया कि किसकी दृष्टि से सृष्टि सुधरती है- ऊँच-ते-ऊँच की दृष्टि से सृष्टि सुधरती है या नीचों की दृष्टि से सृष्टि सुधरती है? (किसी ने कहा- ऊँच-ते-ऊँच) उन्होंने (इस्लामियों ने) अपन को ऊँच समझ लिया और दृष्टि देने की परम्परा शुरू कर दी, पोस्टर छपा दिए- शिव ज्योतिबिंदु ऊपर, उसके नीचे कुमारिका दादी का चित्र, उसके नीचे जानकी दादी का चित्र- विष्णु जी महाराज, उसके नीचे गुलज़ार दादी का चित्र- ब्रह्मा। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। वो (प्रकाशमणि दादी) हो गया महादेव। उस महादेव में शिव बाप प्रवेश करते हैं। उसको देवों में बड़ा देव- महादेव बनाते हैं, फिर वो दूसरों को देवता बनाता है। वाह भाई वाह! हो गई शुरुआत; किस बात की? शिवो अहम्, आत्मा सो परमात्मा। हर आत्मा, परमात्मा बनना शुरू हो गई। जो देहधारी गुरु गद्दी पर बैठा; क्या बन गया? परमात्मा। लेकिन बाप कहते हैं- बाबा तुम बच्चों को राय देते हैं कि कैसे पावन बनो? अरे, देवताएँ कैसे पतित बने? (किसी ने कहा- संग के रंग से) जो विधर्मी-विदेशी धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स आए और अनेकों के संग के रंग से पतित बन गए। ऐसे तुम भी क्या करो? तुम उल्टा कर दो। अनेकों के संग के रंग में मत आओ, अनेकों से कानों द्वारा ज्ञान न सुनो, अनेकों से दृष्टि मत लो। दृष्टि जो है, साकार में भी विनाशी आँखों से ली जाती है और माता (का) बच्चा पढ़ाई पढ़ने के लिए 4-6 साल

विदेश में चला जाता है (तो माता) उसे अंदर की आँख से याद करती है कि नहीं? (किसी ने कहा- करती है) तो संग का रंग लगता है कि नहीं? (किसी ने कहा- लगता है) तो ऐसे ही एक का संग का रंग करो; अनेकों का संग का रंग नहीं लेना है। ऐसे तुम पावन बनेंगे और संग का रंग शरीर के बिना तो लगता ही नहीं, शरीर की इन्द्रियाँ चाहिए। मिसाल दिया जाता है- स्त्री अपने सारे जीवन में पति की पुरुष-इन्द्रिय को याद करती है, तो अंत समय भी क्या याद आता है? अंत मते सो गते हो जाती है, स्त्री को पुरुष का जन्म लेना पड़ता है। ये है संग के रंग (की) बलिहारी। ऐसे ही पुरुष सारा जीवन जिस स्त्री का संग करता है, इन्द्रियों से सुख लेता है, वो सुख अंत समय में याद आता है। अंत मते सो गते, स्त्री का जन्म मिल जाता है। इतना बड़ा मिसाल मौजूद है। तो समझ लेना चाहिए कि प्रैक्टिकल में संग का रंग लिए बगैर पतित से पावन नहीं बन सकते और पावन से पतित भी नहीं बन सकते।

बाबा जो युक्ति बताते हैं, राय बताते हैं; वो याद करते-2 तुम्हारी कर्मातीत अवस्था हो जाएगी। क्या याद करते-2? हे पतित-पावन! आओ। कौन पतित-पावन आओ- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आओ, दादा लेखराज ब्रह्मा आओ? (किसी ने कहा- नहीं) कौन आओ? शिवबाबा आओ। शिव बिंदी का नाम है, जिनके यादगार मंदिर बने हुए हैं, जो संगम में अपने पुरुषार्थ से साकारी से निराकारी बिंदी सदाकाल के लिए बन जाता है। साकारी से क्या बन जाता है? शिव बाप समान निराकारी बन जाता है; वो शिवबाबा की बात है, शिवलिंग की बात है। उस निराकारी बिंदु, सुप्रीम सोल की बात नहीं है, जो कहता है कि न मैं पूज्य बनता हूँ, न मैं पुजारी बनता हूँ। माना मंदिर में जो शिवलिंग पूज्य है, सारी दुनिया में यादगार मंदिर मिले हैं, लिंगाकार मूर्तियाँ मिली हैं, वो सार्वभौम पूजा किस आत्मा की होती है? वो सुप्रीम सोल तो ब्रह्मा द्वारा कहता है- न मैं पूज्य बनता हूँ, न मैं पुजारी बनता हूँ। "न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ।" (मु.ता. 22.5.73 पृ.2 अंत) तो जो शिवलिंग है, जो पूज्य है, पूजने योग्य है, जिसकी सारी दुनिया पूजा करती है, वो किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- साकार की) हाँ, उस साकार मनुष्य-सृष्टि के बाप की यादगार है, जो पुरुषार्थ करके बाप समान टाइटिल धारण कर लेता है, जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। और कोई भी 500/700 करोड़ मनुष्यों में से किसी का नाम शिव के साथ (नहीं जोड़ा जाता), कोई देवता का नाम नहीं जोड़ा जाता, चाहे वो त्रिमूर्ति ही क्यों न हों; क्योंकि वो ऊँचे-ते-ऊँची मूर्ति शंकर है, वो भी याद में बैठा हुआ है। पुरुषार्थ कर रहा है या पुरुषार्थ सम्पन्न हो गया? (किसी ने कहा- पुरुषार्थ कर रहा है) तो अधूरा है या सम्पूर्ण हो गया? अधूरा है। उसको भी इन्द्रियाँ दिखाई जाती हैं, उस नाक, आँख, कान, मुँह, हाथ, पाँव वाली मूर्ति की पूजा मुखिया के समान बीच में बैठे शिवलिंग के समान होती है? किसकी पूजा होती है? उसकी पूजा होती है, जो अपन को शिव समान निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी बनाय लेता है, कर्मातीत बना लेता है। कर्मेन्द्रियों से कर्म करता है और सामान्य कर्मेन्द्रियों से नहीं, उस कर्मेन्द्रिय से कर्म करता है जिस कर्मेन्द्रिय के लिए गायन है- ''काम जीते जगत जीत, इन्द्रिय जीते (जगतजीत)।'' क्या आँख जीते जगत जीत? आँख भी तो इन्द्रिय है। नहीं, जिस इन्द्रिय को जीतना कोई भी मनुष्यमात्र के बस की बात नहीं है, उस इन्द्रिय को जीते जगत जीत। इसलिए शास्त्रों में दिखाया है कि किसने कामदेव को भस्म किया? (किसी ने कहा- शंकर ने) कामदेव कोई अलग से देवता नहीं था। 500 करोड़ मनुष्यात्माओं के बीच में ऊँच-ते-ऊँच हीरो पार्टधारी है, वो महादेव वाली

आत्मा अपने अंदर के काम-विकार को भस्म कर देती है, कर्मातीत अवस्था हो जाती है। कर्म भल कर्मेन्द्रियों से करता है; संन्यासी नहीं है कि कर्मेन्द्रियों से कर्म करना छोड़ दे, संग करना छोड़ दे। नहीं, कर्मेन्द्रियों से कर्म भी करता है; परंतु कर्मातीत स्टेज में काम करता है, कर्मेन्द्रियों का फल प्राप्त नहीं करता है। और जब तुम्हारी कर्मातीत अवस्था बन जाएगी, तो तुमको स्वस्थिति में सदा रहने का वर्सा-स्वर्ग मिल जाएगा। कब मिलेगा? (किसी ने कहा- कर्मातीत हो जाए जब) हाँ, ऐसी स्वस्थिति को धारण कर लो कि कोई भी परीक्षा आ जाए, विकट-से-विकट भी, फिर भी आत्मिक स्थिति को नहीं छोड़ना, कर्मेन्द्रियों के लगाव में नहीं आ जाना, कर्मेन्द्रियों से चंचल नहीं होना।

पीछे चलो, कर्मातीत हो जाना; लेकिन थोड़ा पीछे चलो। पीछे जा करके थोड़ा ठहरना। कहाँ? (किसी ने कहा- परमधाम में) हाँ, जीवनमुक्ति में जाने से पहले, जीवन रहते, देह में आत्मा रहते-2, कर्मेन्द्रियों से कर्म करते-2, ज्ञानेन्द्रियों से कर्म करते-2 पहले आत्मिक स्थिति में ऐसे ठहर जाओ कि घर में नंबरवार ठहरने योग्य बन जाओ। (किसी ने कहा- घर में ठहरने योग्य) हाँ, जब यहाँ इस नीचे की साकार दुनिया में सब प्रकार की सुख-शांति हो जाएगी; क्योंकि दुनिया में जो विनाश होता है, वो सबसे बड़ा विनाश प्रकृति से होता है। प्रकृति-पति कहा जाता है ना! तो प्रकृति-पति का विनाश होता है या ''जरी खसम की लड़कन मारें'' (अर्थात्) प्रकृति-पति के बच्चों का शरीर विनाश होता है, सारी सृष्टि का जब विनाश होगा, तो एक बचेगा या नहीं बचेगा? (किसी ने कहा- बचेगा) साकार सो निराकार, जिसके लिए गीता में कहा है- ''अव्यक्तमूर्तिना''(गीता 9/4)। ऐसी मूर्ति; मूर्ति माने साकार, अमूर्त माने निराकार। ऐसी मूर्ति, जो अव्यक्त भी है, इन आँखों से देखने योग्य नहीं है। अव्यक्त का मतलब- वो मूर्ति जिसके हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान दिखाई नहीं देते। भले इन आँखों से दिखाई नहीं देते; लेकिन है तो साकार ना! कर्मेन्द्रियाँ कट जाती हैं क्या? रहती हैं ना! ऐसे तो नहीं है कट गईं, ख़लास। नहीं! कर्मेन्द्रियों से कर्म करता है; फिर भी निराकारी है। माने वो इन्द्रियाँ इन आँखों से उस मूर्ति में दिखाई नहीं देतीं, सिर्फ ज्ञान-नेत्र से समझी जा सकती है। तो ऐसी जब कर्मातीत अवस्था हो जाएगी; उससे पहले थोड़ा आत्मिक स्थिति में ठहरना, घर में जाना। कौन-सा घर? तुम आत्माओं का घर-आत्मलोक, निराकारी स्टेज वाले बाप का घर।

जब यहाँ सब सुख-शांति हो जाएगी, कहाँ? यहाँ। टाइम तो लगेगा। क्यों टाइम लगेगा? क्योंकि जब आएँगे, तो शरीर में ही तो आएँगे; आत्मलोक से आएँगे, तो नई दुनिया में आएँगे, तो शरीर में आएँगे ना! कि शिव बाप की तरह आएँगे? उसको भी तो शरीर चाहिए। तो जब आएँगे, तो 5 तत्वों का पुतला चाहिए या नहीं चाहिए? (किसी ने कहा- चाहिए) आत्मा तो ऑलरेडी है ही। ऊपर से आई, उसका विनाश तो होता नहीं; लेकिन 500/700 करोड़ के 5 तत्वों के पुतलों का तो विनाश हो गया ना! तो वो पुतले कहाँ से आएँगे? जब यहाँ सब सुख-शांति हो जाएगी; वो 5 तत्व- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, जिनसे तुम्हारा ये शरीर बनता है, वो 5 तत्व सात्विक बन जाएँ। जब वो 5 तत्व तामसी बनते हैं, तो उनमें मुख्य तत्व कौन-सा है? पृथ्वी, सबकी माता-जगदम्बा। पृथिव्यात्- चौड़ी होती जाती है। कन्या होती है तो पतली होती है; माता बनती है तो चौड़ी होती जाती है। तो सबसे बड़ी माता कौन? सारे जगत की अम्बा- (जगदम्बा)। उसको मिसाल

दिया है, जिसे भगवान का अवतार बताया है- मत्स्यावतार। दिखाते हैं- ''छोटी मछली को पहले चुल्लू में लिया, फिर बड़ी हो गई तो पात्र में डाल दिया; और बड़ी हो गई, फिर बड़े घड़े में डाल दिया; घड़े में भी नहीं समाई, वहाँ से निकाला-घर में ही एक छोटा तालाब जैसे बना देते हैं-हौदी में डाल दिया; और बड़ी हो गई तो गाँव के पास तालाब होते हैं, उन तालाब में डाल दिया; और बड़ी हो गई, नदी में डाल दिया; नदी भी भर गई, नदी का पानी रुकने लगा, तो नदी में से निकालके सागर में डाल दिया।'' इतनी चौड़ी होती जाती है। इतनी चौड़ी कैसे हो जाती है? देहभान से चौड़ी होती जाती है। इतना देहभान में चौड़ी होती है कि दुनिया के जितने बड़े-2 देह-अभिमानी हैं, सबको ख़लास कर देती है। सबके ऊपर राज करेगा ख़ालसा। 500/700 करोड़ ब्रह्माकुमार-कुमारियों के ऊपर कौन राज्य करेगा? जो पवित्र रहने वाली आत्मा है, वो राज्य करेगी। शरीर से पवित्र नहीं; शरीर से पवित्र रहते हैं तो गोरे मुँह वाले कहे जाते हैं। शरीर से भल अपवित्र (है); लेकिन मन-बुद्धि से क्या (है)? पवित्र। इसलिए जगदम्बा को दिखाते हैं; क्या दिखाते हैं? महाकाली के रूप में चंद्रमा तो दिखाते ही हैं, तीसरा नेत्र भी दिखाते हैं- शिवनेत्र। देह से भल पतित होती है, प्रबल पुरुष कर्मेन्द्रियों से स्त्री चोले को भल कण्ट्रोल कर लें; फिर भी मुर्दा हो जाए, मन-बुद्धि से ऊपर उड़ जाए, कर्मेन्द्रियों में कोई चंचलता न आने पाए, कोई दुर्योधन-दुःशासन कर्मेन्द्रियों को कण्ट्रोल न कर सके, संग के रंग से चंचल न बना सके। ऐसी स्टेज धारण करने वाली जगदम्बा कही जाती है। वो जगदम्बा पाँच तत्वों का संघात है। पृथ्वी तो है ही मिट्टी। सीता कहाँ से जन्म लेती है? मिट्टी से जन्म लेती है, पृथ्वी से जन्म लेती है और पृथ्वी में ही समा जाती है- उसकी यादगार है। तो बताया- ये पाँच तत्वों का संघात जिस पृथ्वी में है, जिसमें पानी भी है, अग्नि भी है। वैज्ञानिक बताते हैं- पृथ्वी के अंदर इतनी गर्मी है कि सारे तत्व पिघल करके लावा बन जाते हैं। जब भूकम्प आता है तो पृथ्वी के अंदर से वो गर्मी, गर्म-2 लावा इतनी तेजी से निकल करके चारों ओर फैल जाता है कि एकदम जैसे लोहा पिघल करके बहने लगता है। इतनी गर्मी भरी हुई (है)! तो अग्नि भी है कि नहीं? जल भी है, अग्नि भी है, हवा भी है और वैक्यूम (आकाश) भी है। तो ऐसी पृथ्वी माता इतना भयंकर रूप धारण करती है कि दुनिया में बड़े-2 भूकंप लाती है; उन भूकम्पों से दुनिया की सबसे बड़ी आबादी, जो आज के युग में ऊँची-2 अट्टालिकाओं में 100-100/200-200 मार के मकानों में रहती है, वो सब धराशायी हो जावें(गे)। अनेक मंज़िलों के मार (ही) धराशायी नहीं होते हैं, एक मंज़िल के मकान भी सब धराशायी हो जाते (हैं)। कितने मरते होंगे? इसलिए मुरली में बोला- सबसे बड़ा विनाश होता है भूकंप से। तो बताया- जब यहाँ सब सुख-शांति हो जाएगी, आत्माएँ तो शरीर छोड़ करके चली गईं परमधाम- आत्माओं के घर में, आत्माओं के बाप के घर; वो कब आनी चाहिए? अरे, 5 तत्व सतोप्रधान बनें तब आनी चाहिए या पहले ही आ जानी चाहिए? (किसी ने कहा- 5 तत्व सतोप्रधान बनें तब) तो 5 तत्वों में जो मुख्य तत्व है- पृथ्वी, जगदम्बा, वो सात्विक बने। जो पृथ्वी है, जड़त्वमयी बुद्धि वाली है; पाँचों ही तत्व जड़त्वमयी हैं या चैतन्य बुद्धि हैं? जड़त्वमयी बुद्धि हैं। जो चैतन्य आत्मा जगदम्बा है, वो भी जड़त्वमयी बुद्धि है। बाप ने बोला- इतने लंबे समय तक बाप का साथ निभाने वाला वो रुद्रमाला का मणका, जो जगदम्बा के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होता है, साकार शरीर से, साकार कर्मेन्द्रियों से इतना संग का रंग लिया, जितना संग का रंग कोई भी मनुष्यमात्र नहीं ले सकता-पुरुषों की तो बात छोड़ो, कोई कन्या-माता भी इतना लम्बे समय तक संग

का रंग नहीं ले सकती- ऐसी जड़त्वमयी बुद्धि है कि बाप पर भी अनिश्चय-बुद्धि हो जाती (है), औरों-2 के संग से तामसी बन जाती है। 500 करोड़ जो भी विधर्मी हैं, उनके संग के रंग से तामसी बन जाती है। उस माता को दुनिया की सब माताएँ आज तक फॉलो कर रही (हैं)- जितने ज़्यादा बच्चे पैदा करती हैं उतनी ज़्यादा चौड़ी होती जाती (हैं), आत्मा रूपी बुद्धि क्षीण होती जाती है और शरीर चौड़ा होता जाता है। देहभान बढ़ जाता है और आत्मा-अभिमान घट जाता है। बच्चों में सारी बुद्धि चली जाती है, आत्मा की शक्ति निचुड़ जाती है, तामसी बन जाती है। तो देखो, कलियुग के अंत में जब तक भगवान न आए तब तक उस धरती माता का उद्धार कौन करेगा और उसके पीछे चलने वाली जो अन्यान्य माताएँ हैं, उन माताओं का उद्धार कौन करेगा? इसलिए बोला कि भगवान बाप जब आते हैं तो जिन कन्याओं-माताओं को दुनिया वाले ठुकराते हैं, नीचे गिराते हैं, उन्हीं कन्याओं-माताओं को बाप स्वर्ग का गेट खोलने के लिए निमित्त बनाते हैं और बादशाही देते हैं- राज्य करो। अकेली जगदम्बा राज्य करती है कि ढेर भुजाएँ भी दिखाते हैं? सहयोगी अनगिनत भुजाएँ भी दिखाते हैं। वो कन्याएँ-माताएँ, जो ब्राह्मणी बनती हैं; आदि में सन् 1947 से पहले बेसिक नॉलेज में भी ब्राह्मणों की दुनिया में कण्ट्रोल करती हैं और एडवांस नॉलेज की दुनिया में भी कण्ट्रोल करती हैं और अंत तक भी, जब तक दुनिया का टोटल विनाश न हो तब तक कण्ट्रोल करती रहेंगी। इसलिए ख़ास करके सिक्खों में गायन है- ''राज़ करेगा ख़ालसा।''

बोला- जब यहाँ सब सुख-शांति हो जाएगी; सब माने क्या? पाँच तत्व भी सब पहले ही ख़लास तो हो गए। (पाँच तत्व) ख़लास हो गए तो आत्माएँ आत्मिक स्थिति में परमधाम चली गईं, घर में चली गईं, बाप के पास चली गईं, बाप की गोद में चली गईं, शांति में चली गईं। इसलिए बोला- क्या याद करो? बाप को याद करो, घर को याद करो, स्वर्ग को याद करो। "अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।" (मु.ता. 15.7.66 पृ.3 आदि) अरे, तीन-2 को क्यों याद करें? तीन-2 को क्यों बताया? एक शिवबाबा दूसरा न कोई कि तीन-2? (किसी ने कहा- एक शिवबाबा) फिर कारण क्या? तीन क्यों बताया? क्योंकि जो साकार बाप है, जिसमें निराकार प्रवेश करता है, वो हमारा घर भी है, जो सृष्टि रूपी वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ है, जिस साकार की याद में सारी दुनिया उसमें समा जाती है। जो बोलता है- ''मन्मनाभव'' (अर्थात्) मेरे मन में समा जा। कौन बोलता है, ऊपर वाला आत्माओं का बाप? उसको मन होता है? (किसी ने कहा-साकार बाप) साकार बाप को मन होता है। वो बोलता है- मत् मना भव (अर्थात्) मेरे मन में समा जा। मन कहो, दिल कहो; उस बाप का दिल कौन है? अरे, कोई भी दुनिया के बाप का, जितने बड़े-2 राजाएँ बाप बने, उनका दिल परिवार में किसके ऊपर गया? बड़े बच्चे के ऊपर गया। तो ये भी दिल वाला बाप है, जिसको 'बाबा' नाम दिया। उस शिवबाबा का इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, सतयुग में सृष्टि का पहला पत्ता बड़ा बच्चा बनता है; कौन? ब्रह्मा उर्फ कृष्ण। जिसके लिए बोला कि बाप अकेला जन्म नहीं लेता, बच्चे के साथ बाप की प्रत्यक्षता होती है। जब बाप प्रत्यक्ष होगा तो कृष्ण बच्चा भी प्रत्यक्ष होगा। सारी पढ़ाई किसके लिए हो रही है? कृष्ण बच्चे के लिए हो रही (है)। तो सारी सृष्टि का विनाश होता है, तो जो कृष्ण बच्चा है पहला पत्ता, जो संगम की शूटिंग में ब्रह्मा कहा जाता है- बड़ी अम्मा और उसके साथ बड़ा बाप जगतपिता; (उस) बाप के बुद्धि रूपी पेट में वो जगदम्बा (की) आत्मा उस अव्यक्त-मूर्त शिवलिंग

में पहले-2 प्रवेश कर जाती है, उसकी याद में मन्मनाभव हो जाती है। किसने बोला- मन्मनाभव? कौन-सी आत्मा ने बोला? (किसी ने कहा- साकार सो निराकारी) मनुष्य-सृष्टि का जो बाप है, वो बोलता है- मेरा मन रूपी घोड़ा कहो, बैल कहो, उसके गुणों में समा जा। उसमें मुख्य गुण कौन-सा था? सहनशक्ति। सहनशक्ति सब गुणों का राजा। उसकी गोद में समा जा माना उस समान सहनशक्ति को धारण कर ले, समा जा। और बाप भी कहते हैं- तुम बच्चे कितना भी देह-अभिमान दिखाओ; लेकिन अंत में मैं तुम बच्चों को मच्छरों सदृश ले जाऊँगा। मच्छरों को भारी-भरकम देह होती है? नहीं। कोई देह-अभिमान नहीं रहेगा। कम-से-कम बिल्कुल अंत में धर्मराज मार-2 के सारे देहभान को, सारे देहभान के छिलके को उतार देगा, तब ले जाऊँगा।

बोला- पहले घर में जाएँगे या सुखधाम में जाएँगे? (किसी ने कहा- घर में) और घर कौन-सा है तुम्हारा? (किसी ने कहा-परमधाम) परमधाम कौन-सा है इस सृष्टि पर? (किसी ने कहा- साकार बाप) साकार सो निराकार, जो सृष्टि रूपी वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ है। सभी 500/700 करोड़ आत्माएँ दुनिया की भगद्दड़ के बीच, अशांति के बीच, विनाशकाल के टाइम पर देहभान में होंगी या आत्मा-अभिमान में होंगी? (किसी ने कहा- आत्माभिमान) आत्माभिमान में होंगी? (किसी ने कहा- देहभान में) बाप कहते हैं- अंत में तुम बच्चों को ऐसी दृष्टि दूँगा जो तुम देह में ठहर नहीं सकेंगे। तो बच्चे अपने पुरुषार्थ से ठहरेंगे या बाप उनको दृष्टि से संग (का रंग) लगाकर तुम्हारी सृष्टि को सुधारेगा? बाप सुधारेगा। इसलिए सृष्टि-वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ (है), जो बच्चों को बोलता है- मैं तुम बच्चों को नैनों पर बिठाकर ले जाऊँगा; लेकिन तुम बच्चों को, उन बच्चों को नहीं, दुनिया वाले विधर्मियों को या विधर्म में कन्वर्ट होने वाले बच्चों को नहीं। इनको भी नहीं, इनको माने? ब्रहमा को नहीं। तुम बच्चों को ले जाऊँगा; क्योंकि ये तो मेरे साथ ही रहता है। कौन? ब्रहमा। क्या नाम देते हैं हम लोग उसे? बाप-दादा, मात-पिता। तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो। एक ही शख्सियत है, एक ही पर्सनैलिटी है या दो हैं? एक ही है। जो एक है, उसका गायन है ‘बाप-दादा’, उसका गायन है ‘मात-पिता’। तो वो तो साथ-ही-साथ (है)। जब सृष्टि का विनाश होगा तो कौन-सी आत्माएँ पहले-2 बाप के बुद्धि रूपी (पेट) में निवास करेंगी? नं०वार सृष्टि की बीज-रूप रुद्रगणों की आत्माएँ निवास करेंगी। लौकिक दुनिया में भी जो भी बच्चे होते हैं (वो) किससे पैदा होते हैं? बाप से पैदा होते हैं! माँ से पैदा नहीं होते? अरे, दुनिया क्या कहती है? दुनिया कहती है- माँ से बच्चे पैदा होते हैं; क्योंकि आँखों से देखे जाते हैं। दुनिया देह को महत्व देती है; लेकिन हम बच्चे देह की आँखों को महत्व देते हैं या तीसरे नेत्र-बुद्धि रूपी आत्मा को महत्व देते हैं? (किसी ने कहा- तीसरे नेत्र) हम जानते हैं कि माता से पहले-2 बच्चा नहीं आता है। बच्चे की आत्मा पहले-2 कहाँ से आती है? (किसी ने कहा- बाप से) बाप से आती है? देह-अभिमानी बाप, देह को पहले निर्माण करता है या आत्मा को निर्माण करता है? (किसी ने कहा- देह को) तो माँ के पेट में पहले हाथ-पाँव वाला देह का पिंड तैयार होता है। उसका बीज है बाप के पेट में, जिसे वीर्य कहा जाता है। वो बीज माँ के पेट में आता है, उस बीज से भ्रूण तैयार होता है। भ्रूण जब बड़ा होता है, हाथ-पाँव वाला होता है तब उसमें आत्मा 4/5 महीने के बाद प्रवेश करती है। फिर 4/5 महीने के बाद बच्चे का जन्म होता है, प्रत्यक्षता होती है। तो ऐसे ही है, जब सतयुगी सृष्टि का निर्माण होता है, पहले पत्ते कृष्ण का जन्म होता है, तो वो पहले पत्ते की आत्मा भी किसमें जाती है? बाप के बुद्धि रूपी पेट में जाती है, फिर नंबरवार 500 करोड़ बच्चे जाते हैं।

किसकी याद में जाते हैं? कौन कहता है- मन्मनाभव? वो निराकार शिव बाप या ये- कौन कहता है? साकार बाप कहता है।

विनाश काल में दुनिया में जब बड़ी भारी अशांति हो जाती है, तो वो 500/700 करोड़ मनुष्यात्माएँ आत्मिक स्थिति में टिकेंगी या देहभान में, भगदड़ में आ जाएँगी? (किसी ने कहा- आत्मिक स्थिति में) आत्मिक स्थिति में टिकेंगी? वो अपने-आप आत्मिक स्थिति में नहीं टिकतीं, बाप उनको खींचता है। तो वो सभी आत्माएँ आत्मिक स्थिति में स्थित होकर, मन्मनाभव होकर बाप (के) बुद्धि रूपी पेट में समा जाती हैं। इसलिए गीता में भी लिखा है- ''उस बीज से ही मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष निकलता है।'' (मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।) (गीता 9/4) फल पकता है। उसमें पहले फल का जो पहला बीज होता है, जब पूरा पक जाता है तो बीज फल से अलग हो जाता है। डिटैच हो गया ना! ऐसे ही ये मनुष्य-सृष्टि का बीज है, जो पहले-2 नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा बनता है। वो मनुष्य-सृष्टि का बीज, मनुष्य-सृष्टि का बाप है। वो मनुष्य-सृष्टि का बाप उन बीज-रूप आत्माओं को, जिन्हें 'रुद्रगण' यादगार रुद्राक्ष कहा जाता है, उन बीजों को पहले-2 ऐसी तीखी दृष्टि देता है, ऐसा प्यार देता है कि कहा जाता है- नयनों पर बिठाकर ले जाऊँगा; नहीं तो नैन तो इतने छोटे, बच्चों (का) तो देहधारी दुम्ब इतना बड़ा, कैसे ले जाएँगे? ये आत्मा को खींचने की बात है, मन-बुद्धि को आकर्षित करने की बात है। कृष्ण भगवान का अर्थ ही है- आकर्षण मूर्त।

तो बोला- तुम बच्चे घर में पहुँच जाएँगे, परमधाम/आत्मलोक में, आत्माओं के बाप के घर और यहाँ इस सृष्टि पर सब सुख-शांति हो जाएगी, ये पाँच तत्वों का तमोप्रधान किचड़ा सब क्लीयर हो जाएगा तब आना। थोड़ा भी किचड़ा रह जाए, उस सृष्टि में नहीं आना। आ करके राज्य करना। कैसे? यथा राजा तथा प्रजा। पारिवारिक व्यवस्था होती है और उस बच्चे से पूछा जाए- ये दुकान किसकी (है), ये मकान किसका (है), ये कारख़ाना किसका (है)? तो बच्चा किसका बताएगा? मेरे बाप का, मेरा है। (जब) ऐसी 100 परसेण्ट पक्की पारिवारिक व्यवस्था बनती है, तो जो राजा होता है वो प्रजा को अपने बच्चों की तरह देखता है। 'प्र' माने प्रकृष्ट रूपेण, 'जा' माने जन्म देता है। ऐसे सात्विक बच्चे, राजा के बच्चे का अनुभव करते हैं। (आ करके) राज्य करना। इसमें समझने में क्या बड़ी बात है? अरे, दुनिया का विनाश होगा (और) तुरंत राज्य करने चले जाएँगे नई दुनिया में, तुरंत नई दुनिया बन जाएगी? नहीं। इसलिए पीछे वाणी में बता दिया; क्या बता दिया? स्वर्ग और नर्क कहा जाता है। ये दोनों का संगमयुग का टाइम देते हैं। ये भी हो जाएगा।

ब्रह्मा बाबा समझते हैं- कम-से-कम 100 वर्ष तो देना चाहिए इसको भी। ब्रह्मा के मुख से संगमयुग को कितना टाइम दिया? 100 वर्ष। पुरुषोत्तम युग, ये युग को कम-से-कम 100 बरस तो देना चाहिए ना, जो ये कचरपट्टी सब साफ हो जाए। वो जो रुद्रमाला के बच्चे बचते हैं; उनमें भी जो दो बचते हैं, कौन (दो बचते हैं)? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) हाँ, दोनों बचते हैं। उन दो में से भी जो वो है, इशारा किया ना० की तरफ़, वो रहेगा एक बीज और बाकी सब चले जाएँ। क्लीयर हो जावे सभी, फिर उनको कहेंगे नई दुनिया में सब गए।

तो बोला- दुनिया को ख़लास होने में कम-से-कम 100 वर्ष देना चाहिए। पहले बोलो- वो बात रही 40 वर्ष, 50 वर्ष, 100 वर्ष लगे। हमारा तो उससे भी कोई कनेक्शन नहीं, विनाश से। हमारा कनेक्शन काहे से है? हमारा कनेक्शन है जीवनमुक्ति से। हम क्या वर्सा चाहते हैं? जीवनमुक्ति का। तो वो जीवनमुक्ति की दुनिया- जहाँ हमारा जीवन भी हो, पाँच तत्वों का शरीर भी हो और जीवन में हमें सुख मिले, दुःख नहीं मिले। वो 100 वर्ष के बाद हो जाएगा कि टाइम लगेगा? वो टाइम लगेगा। तो ये कहें कि संगमयुग 100 वर्ष से भी ज़्यादा है। तुम्हारे लिए 100 वर्ष। तुम बच्चों (ने) कब से जन्म लिया? कब से समझा- हम सूर्यवंशी हैं? 1976 से। तो 1976 से 100 साल जोड़ो, कब तक हुआ? 2076 कम-से-कम। 1936 से लेकर 46, 56, 66, 76 (तक) कितने साल हुए? (किसी ने कहा- 40) हाँ, ये 40 साल और लगेंगे तुमको जीवनमुक्ति का वर्सा लेने के लिए। कौन-से बाप से लेंगे? (किसी ने कहा- साकार बाप से) निराकार बाप वहाँ होगा जो जीवनमुक्ति का तुम्हें वर्सा दे? (किसी ने कहा- साकार बाप) वो साकार बाप होगा, जिसने 100 परसेण्ट उस निराकारी बाप को और उसके निराकारी ज्ञान के वर्से को पहचाना, औरों ने नहीं पहचाना। जानना/पहचानना एक ही बात (है)। जान लिया माना ज्ञान लिया। जो जितना बाप को जानता, पहचानता है, बाप की पहचान का ज्ञानी बनता है, वो उतना बड़ा वर्सा लेता है। इसलिए पढ़ाई में मुख्य सब्जेक्ट कौन-सा (है) पहले? ज्ञान, बाद में योग। और ज्ञान का वर्सा कौन देता (है)? ज्ञान है निराकार, तो वर्सा देने वाला भी निराकार (होना चाहिए) और योग माने ताकत/शक्ति, वो योग की ताकत कौन देता (है)? अरे, योग लगाने वाला होगा, योगी होगा, कोई से योग लगाएगा तब तो योगी बनेगा। योगी है ना! योग लगाता है ना! खुद योगी नहीं होगा, तो दूसरों को योगशक्ति का वर्सा देगा? योग ही शक्ति है, जिसे अष्टसिद्धि, नौ निधि के दाता कहा जाता है। आठ सिद्धियाँ मिलती हैं; इसलिए भक्तिमार्ग में कपिल मुनि को सांख्य शास्त्र का प्रणेता बताया। सांख्य का मतलब- स माना सह=साथ (और) आख्या माना व्याख्या। जो व्याख्या के सहित ईश्वरीय ज्ञान को सुनाता है, वो सांख्य शास्त्र का प्रणेता कौन-सा मुनि गाया गया? कपिल मुनि। उसकी बसाई गई नगरी का नाम 'काम्पिल्य' पड़ा। एक मात्रा बढ़ जाती है रचना के अर्थ में। तो वो सांख्य शास्त्र का प्रणेता योगी है, आठ प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करके नंबरवार बच्चों को देने वाला है। तो बताया कि ज्ञान का वर्सा किससे मिलता है? (किसी ने कहा- निराकार बाप से) निराकार ज्ञान तो ज्ञान का दाता, वर्से का दाता (भी) निराकार बाप। कैसा वर्सा देता (है)? निराकारी वर्सा देता (है)। और साकारी वर्सा- योग; साकारी वर्सा क्या है? याद। किसकी याद? एक की याद या दो की याद? (किसी ने कहा- साकार में निराकार की) साकार में निराकार को पहचानता है कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कौन है साकार सो निराकार। पहचानता है कि नहीं? (किसी ने कहा- पहचानता है) और पहचान करके उसी स्वरूप को, उसी स्वरूप में याद करता है। तो योगी कौन हुआ- वो निराकार शिव या ये साकार? (बाबा ने ऊपर और नीचे की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) (किसी ने कहा- साकार बाप) वो कहलाएगा योगी, योग लगाने वाला, (बाबा ने ऊपर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) वो निराकार शिव बिंदु योग लगाता है? किसी साकार सो निराकार को याद करता है? नहीं, उसे याद करने की क्या दरकार! वो कभी पतित बनता है? नहीं, पतित ही नहीं बनता। उसको कोई पावन बनाने वाला है क्या, जिसको याद करे? उससे ऊँची कोई और आत्मा है क्या? (किसी ने कहा- नहीं) तो किसको याद करेगा?

इसलिए वो जिसमें प्रवेश करता है, वो योगियों का ईश्वर, 'योगेश्वर सनतकुमार' कहा जाता है। भक्तों ने शंकर को भी 'योगेश्वर' कहा है। प्रैक्टिकल ब्रह्मा (हुआ) दादा लेखराज। वास्तव में जो ब्रह्मा का बड़ा पुत्र है, जो ज्ञान में बड़ा हुआ, (वो) कौन हुआ? ब्रह्मा के मुख से निकले हुए ज्ञान को सबसे जास्ती किसने धारण किया? शंकर के लिए गायन है, वो बड़ा बच्चा है। कहते भी हैं- त्रिमूर्ति शिव। ब्रह्मा की मूर्ति- ब्रह्मा देव, विष्णु देव; और आगे? शंकर महादेव। तो बड़ा बच्चा कौन हुआ? मुरली में ही क्लीयर कर दिया- शिव का बड़ा बच्चा महादेव। "गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं।" (मु॰10.2.72 पृ॰4 मध्यांत) तो वो बड़ा बच्चा विश्व का बादशाह बनता है। कौन-सी प्रॉपर्टी के आधार पर? ज्ञान की प्रॉपर्टी के आधार पर, त्रिनेत्री होने की प्रॉपर्टी के आधार पर, योग लगाने के आधार पर। तो जो बाप कमाता है वो ही बच्चों को वर्सा दे सकता है। कमाएगा नहीं, अर्जन नहीं करेगा (तो बच्चों को दे भी नहीं सकता)। अर्जुन कहा ही जाता है- जो सद्भाग्य का अर्जन करता है। उसको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। तो जो दुनिया में सबसे भाग्यशाली रथ है, वो भाग्य किससे लेता है? उसको भाग्य का वर्सा देने वाला कौन (है)? शिव बाप, ब्रह्मा द्वारा देता है; इसलिए भाग्यविधाता ब्रह्मा को कहते हैं। किसको कहते (हैं)? ब्रह्मा भाग्यविधाता।

इसलिए बताया कि हमारे पास जो कुछ उनका दिया हुआ जमा होता है, हम उसकी बताई हुई युक्ति को, राय को मानते ही नहीं, समझते ही नहीं। हमको मालूम ही नहीं, तो हम उसका जमा कैसे करेंगे? ये भी खिर नहीं है बहुतों में, अक्ल ही नहीं है। ज्ञान तो बहुत है, बाकी बुद्धि में वो पतित से पावन बनने की युक्ति नहीं है, जो भक्तिमार्ग में भी बिना जाने बुलाते रहे और अब ज्ञानमार्ग में जान करके बुलाते हैं; तो भी बुद्धि से वो पूरी पहचान ले करके नहीं बुलाते कि आओ! और जो इन्द्रियों में सबसे श्रेष्ठ इन्द्रिय है; कौन-सी? आँख; उसके संग के रंग से हमको क्या बनाओ? पतित से पावन बनाओ। जानते ही नहीं तो हम जमा कैसे करेंगे? बहुतों में ये खिर नहीं है। ज्ञान तो बहुत है, बाकी वो युक्ति, जो बाप बताते हैं संग के रंग की, पतित से पावन बनने की, वो युक्ति बच्चों में नहीं है। सामने बैठेंगे (फिर भी) झूमते रहेंगे, तो बुद्धि में बैठा क्या? कहेंगे- बुद्धि में बैठा? नहीं बैठा, धंधे-धोरी में बुद्धि लगी हुई है। जो बाप का धंधा सो बच्चों का धंधा होना चाहिए। हद के धंधों में बुद्धि लग जाती है; जो बेहद के बाप का धंधा है, उसमें बुद्धि नहीं लगती। युक्ति ही नहीं (है)। बस, ये सेंटर हमने खोला, ये हमने खोली गीता-पाठशाला, वो हमने खोला। हमने खोला नहीं, शिवबाबा कह दो- हमने नहीं खोला। किसने खुलवाया? (किसी ने कहा- करन-करावनहार) करन-करावनहार कौन है? शिवबाबा। नहीं तो बहुत से पैसे वाले हैं, महल-माड़ियों वाले हैं; ब्राह्मण बहुत से हैं कि नहीं? सबने खोला? सबने गीता-पाठशाला खोली क्या? (किसी ने कहा- नहीं) सबने सेंटर खोला क्या? नहीं खोला। तुमने इनडायरैक्ट जाकर किसको दिया? पूछा- तुमने खोला, तो तुमने इनडायरैक्ट जा करके किसको दिया? (किसी ने कहा- शिवबाबा को) जिसको दिया उसने खोला। जिसको दिया उसने खोला, वो थ्रू ब्रह्मा ने नहीं खोला। तो वो ज़ोर भी नहीं मारते हैं। कौन? दादा लेखराज ब्रह्मा। कौन ज़ोर मारते हैं? (किसी ने कहा- ब्रह्मा) बोला- गुरुर्ब्रह्माः गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुः साक्षात् परंब्रह्म। उस परंब्रह्म को पहचाना क्या, जिसको सारी दुनिया नमन करती है? आख़रीन उसको तो पहचाना ही नहीं। समझा ना! नहीं पहचाना तो वो सेंटर्स इतना

ज़ोर नहीं भरते हैं। तो सेंटर भी खोलना है, तो थ्रू ब्रहमा खोलना है। किसके थ्रू? ब्रहमा के थ्रू; परंतु ब्रहमा तो बहुतों के नाम हैं। कौन-से ब्रहमा के थ्रू? (किसी ने कहा- प्रजापिता) नहीं, प्रजापिता भी पतित का नाम है। किसके थ्रू खोलना है? (किसी ने कहा- परंब्रहम) हाँ, परंब्रहम के नाम। परंब्रहम को पहचान करके तब खोलना है। तो ये बात बुद्धि में आ जाए। वो आपे ही युक्ति रचेगा- हाँ बाबा, ये हम देते हैं, ये पाई देते हैं, ये यज्ञ खोलने में आप लगा देना। हम नहीं लगा रहे हैं, कौन लगा देना? आप लगा देना। बस, ख़लास। तो ये बात भी, भूल तो बहुत करते हैं ना! उनको पता ही नहीं पड़ता है कि वो परंब्रहम कौन है जिसके सामने अंत में सारी दुनिया झुकेगी (और वो) सारी दुनिया के मनुष्यमात्र का, विश्व-धर्मों का, सारे विश्व का पिता/पति/विश्वनाथ भी बनने वाला है। इसीलिए कहा जाता है- ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव।'' ओम शांति।